दीपशिखा

महात्मा गाँधी पी.जी. कालेज

गोरखपुर

नैक (यू.जी.सी.) द्वारा "बी" ग्रेड प्रदत्त

Website : www.mgpgc.co.in | E-mail : mgpg_gkp@reddifmail.com

शिक्षक परिवार

बैठे हुए (बाएं से दायें) डॉ. नमिता कुमार, डॉ. अलोक रंजन, डॉ. आर.एन. शुक्ला, डॉ. अवनीश, डॉ. महेश यादव, डॉ. उमेश कुमार गुप्ता, प्रो. (डॉ.) अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), डॉ. एस. के. श्रीवास्तव, डॉ. अमर नाथ ठाकुर, डॉ. अलोक कुमार श्रीवास्तव, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, डॉ. अनिल कुमार मिश्रा, डॉ. संतोष कुमार त्रिपाठी

खड़े हुए प्रथम पंक्ति (बाएं से दायें) डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह, डॉ. शशांक श्रीवास्तव, डॉ. फणीन्द्र त्रिपाठी, डॉ. शरद गुप्ता , डॉ. सुभाष शर्मा, डॉ. अल्पना त्रिपाठी, डॉ. छमता श्रीवास्तव, डॉ. शदफ अतहर, डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव, डॉ. शक्ति सिंह, डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव, डॉ. मंजुला श्रीवास्तव, डॉ. संगीता श्रीवास्तव, डॉ. अनिता कुमारी, डॉ. शिखा श्रीवास्तव, डॉ. आकांक्षा सिंह, डॉ. रूपम, डॉ. संगीता त्रिपाठी, श्री ऋतेश कुमार श्रीवास्तव,

खड़े हुए द्वितीय पंक्ति (बाएं से दायें) डॉ. शैलेन्द्र कुमार, डॉ. अमित राय, डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव, डॉ. संजय कुमार गौतम, डॉ. रविन्द्र कुमार शुक्ला, डॉ. आकाश पाण्डेय, डॉ. संजय सिंह, डॉ. शैलेश वर्मा, डॉ. अजय बहादुर सिंह, डॉ. आयुष यादव, डॉ. रवि प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. संजय यादव, डॉ. गौरव कुमार श्रीवास्तव, डॉ. सतीश शर्मा, डॉ. नितिन बक्शी, डॉ. आर.एन. यादव, डॉ. अरुण श्रीवास्तव

सत्र 2021-22 में राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न गतिविधियाँ

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता सत्र 2021-22

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि पूर्व की भांति इस वर्ष भी हमारा महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका दीपशिखा 2022 का प्रकाशन करने जा रहा है। मेरी नजर में यह विद्यार्थियों शिक्षकों एवं कर्मचारियों तथा महाविद्यालय के समस्त वार्षिक गतिविधियों को प्रदर्शित करने का एक सशक्त माध्यम है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी वार्षिक पत्रिका दीपशिखा का नवीन अंक विभिन्न क्षेत्रों एवं विषयों पर केंद्रित समसामयिक उपयोगी एवं पठनीय सामग्री समाविष्ट करेगा। मैं दीपशिखा 2022 के सफल एवं सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

Srivastava 14/6/22

गंगा दयाल श्रीवास्तव
अध्यक्ष प्रबंध समिति
महात्मा गाँधी पी जी कॉलेज गोरखपुर।

संदेश

सेवा में
डॉ अनिल कुमार सिंह
प्राचार्य
महात्मा गाँधी पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर

महोदय

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका दीपशिखा का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें ।आज के समय में उच्च शिक्षा के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (ह्श्वक्क) 2020 सभी विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में लागू है। हर महाविद्यालय का यह उद्देश्य होना चाहिए कि छात्र-छात्राओं को विषय ज्ञान के साथ.साथ जीवन के व्यावहारिक ज्ञान से भी अवगत कराया जाए। अपना महाविद्यालय सभी शिक्षकों तथा आपके सहयोग से इस कार्य को पूरी तत्परता के साथ कर रहा है।

नेशनल एजुकेशनल सोसायटी महाविद्यालय की प्रगति एवं छात्र छात्राओं के चौमुखी विकास से पूरी तरह अवगत है तथा इस बात का गर्व है कि महात्मा गाँधी पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर की स्थापना आज से 53 वर्ष पूर्व सोसाइटी द्वारा की गई थी। विज्ञान के क्षेत्र में उच्च शिक्षा के उद्देश्य को पूरी सार्थकता प्रदान कर रहा है तथा वर्तमान में वाणिज्य विषय, गृहविज्ञान एवं मनोवज्ञान विषयों में समृद्ध उच्चशिक्षा की व्यवस्था पूरे मनोयोग से कर रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका छात्र-छात्राओं के लेखन कौशल को बढ़ाते हुए महाविद्यालय परिसर की शैक्षणिक गतिविधियों को आलोकित करने में सक्षम होगी।

वार्षिक पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी मंगल शुभ कामनायें प्रेषित करता हूँ।

मंकेश्वर नाथ पांडेय
प्रबंधक/सचिव
महात्मा गाँधी पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर।

From Principal's Pen....

The last two years have been an extraordinary challenge on account of COVID-19. Though there were times of crisis and irreparable losses, yet by amongst that, to look at the brighter part, this pandemic gave us an opportunity to rethink and reassess the strategies for higher education. We should learn that such tough times of crisis ought to inspire creativity, transformation, and renewal. Now the challenge before us is to adapt, regenerate, and focus on the higher education for a strong and sustainable future. In order to achieve this, we'll have to maintain a vibrant, dynamic and academic atmosphere in the campus. Learning should be fulfilling and enjoyable experience for the students through a multidisciplinary approach which should be wholesome and holistic. Innovative culture will have to be adapted to improve the skills of students in diverse programs to mould them to become notable change-makers of the society. It is pertinent to mention here that our College not only aims at 'what is taught' but also 'the way it is taught'. We have to keep empowering our students' mentorship in order to leverage the intellectual and emotional capabilities of students. It should be our collective endeavour to promote an inspirational, motivational, value-based, academic, and administrative environment. Upholding academic accountability, sustaining open and transparent systems, and also being sensitive to our social responsibilities, should be our earnest attempt . This can be made possible only through a collaborative, shared, and team-work culture, and thus, we can build a strong foundation of the college.

Having joined as a Principal in this College just a few months ago, I shall try to nurture at Mahatma Gandhi P.G.College, a uniqueness, that each individual of the College, when faced with a problem of different nature, unravels a new dimension to its approach, thus coming up with a solution.

Let us all invoke the blessings of Lord Maa Saraswati, as we march ahead and gear up to myriad managerial, economic, societal, and environmental challenges.
My greetings are with all the faculty members and students involved with this magazine. May the magazine fulfills it's aim of entertaining and igniting the readers' mind.

With best wishes

19.5.2022

Dr. Anil Kumar Singh
Principal

अनुशासन समिति

बैठे हुए (बाएं से दायें): डॉ. फणीन्द्र त्रिपाठी, डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव, डॉ. शैलेश वर्मा, डॉ. संजय सिंह, डॉ. महेश यादव (मुख्या नियंता) डॉ. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), डॉ. अलोक रंजन (उप मुख्या नियंता) डॉ. संतोष कुमार त्रिपाठी, डॉ. संजय कुमार गौतम, डॉ. शक्ति सिंह.

खड़े हुए (बाएं से दायें): डॉ. आर. एन. यादव, डॉ. आर. एन. शुक्ला, डॉ. रविन्द्र कुमार शुक्ला, डॉ. संजय यादव, डॉ. शैलेन्द्र कुमार, डॉ. अजय बहादुर सिंह, डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह, डॉ. अनिल कुमार मिश्रा, डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव, डॉ. क्षमता श्रीवास्तव, डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव

संपादक मण्डल

बाएं से दायें : डॉ. आकाश पाण्डेय, डॉ. अवनीश (मुख्य संपादक), डॉ. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह, डॉ. शदफ अतहर

आई.क्यू.ए.सी. सेल

बैठे हुए (बाएं से दायें): डॉ. अवनीश, डॉ. उमेश कुमार गुप्ता, डॉ. नमिता कुमार (आई क्यू ए सी चेयरमैन), डॉ. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), डॉ. अमर नाथ ठाकुर, डॉ. अलोक कुमार श्रीवास्तव

खड़े हुए (बाएं से दायें): डॉ. शैलेन्द्र कुमार, डॉ. अलोक रंजन, डॉ. महेश यादव, डॉ. संतोष कुमार त्रिपाठी

शिक्षेणत्तर परिवार

बैठे हुए (बाएं से दायें): श्रीमती शशिबाला श्रीवास्तव, श्री अमृत लाल, श्रीमती रीता शुक्ला, डॉ. विवेक कुमार यादव (OS), डॉ. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती विनीता श्रीवास्तव, श्री रजत श्रीवास्तव, श्री प्रमिल कुमार मिश्रा

खड़े हुए प्रथम पंक्ति (बाएं से दायें): श्रीमती सुरेखा देवी, श्री मुकेश भारती, श्री आलिम, श्री शशांक शेखर श्रीवास्तव, श्री सुरेश गुप्ता, श्री चन्द्र प्रताप यादव, श्री कुलदीप सहाय, श्री राजेश यादव, श्री आनजनेय गुप्ता, श्री अनिल गुप्ता, श्री शिवम् आनंद,

खड़े हुए द्वितीय पंक्ति (बाएं से दायें): श्री ईश्वर चन्द्र यादव, श्री शैलेन्द्र कुमार, श्री सुरेश प्रसाद, श्री रामधनी, श्री युसूफ, श्री ब्रिजेश मिश्रा, श्री अब्दुल कयूम, श्री रामज्ञा, श्री अमरनाथ गोंड, श्री कृष्ण कुमार

कार्यालय परिवार

बैठे हुए (बाएं से दायें): श्रीमती रीता शुक्ला, डॉ. विवेक कुमार यादव (OS), डॉ. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती विनीता श्रीवास्तव

खड़े हुए (बाएं से दायें): श्री आलिम, श्री शशांक शेखर श्रीवास्तव, श्री सुरेश गुप्ता, श्री चन्दश्री कुलदीप सहाय, श्री अनिल गुप्ता, श्री ईश्वर चन्द्र यादव, श्री सुरेश प्रसाद

पुस्तकालय

बैठे हुए (बाएं से दायें): डॉ. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य),
श्री सुशील कुमार (पुस्तकालाध्यक्ष)

खड़े हुए: श्री मुकेश भारती

महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ

स्मार्ट फोन/टेबलेट वितरण कार्यक्रम

शैक्षणिक भ्रमण

दीपशिखा

वार्षिक पत्रिका-2022

महात्मा गाँधी पी.जी. कालेज, गोरखपुर

(नेशनल एजुकेशन सोसाइटी द्वारा संचालित)

नैक (यू.जी.सी.) द्वारा ''बी'' ग्रेड प्रदत्त

Website : www.mgpgc.co.in | E-mail : mgpg_gkp@reddifmail.com

संरक्षक
डा. अनिल कुमार सिंह
प्राचार्य

प्रधान सम्पादक
डा. अवनीश
विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग

सम्पादक मण्डल

डा. चन्द्र प्रकाश सिंह - रसायन विज्ञान विभाग
डा. शैलेन्द्र कुमार - जन्तु विज्ञान विभाग
डा. शदफ अतहर - वाणिज्य विभाग
डा. आकाश पाण्डेय - गणित विभाग

कुल गीत

तपस्थली गोरक्षनाथ की-(2), सरस्वती का पावन धाम
महात्मा गाँधी पीजी कालेज विद्या का है संस्थान।
तपस्थली गोरक्षनाथ की-2

राम गरीब लाल की इच्छा हर नारायण का संकल्प
तमसो माँ ज्योतिर्गमय का यह विद्यालय बना प्रकल्प।
गाँधी जी की जन्म शती से यात्रा शुरु हुई अभिराम
महात्मा गाँधी पीजी कालेज-(1)

सत्य अहिंसा और प्रेम का मिलता है संदेश यहाँ
ज्ञान और विज्ञान समन्वित शोध परख परिवेश यहाँ।
सब धर्मों का करे सम्मान अंतर मन निश्छल निष्काम।
महात्मा गाँधी पीजी कालेज-(1)

यह फिराक की जन्म भूमि है बिस्मिल का बलिदान यहाँ।
प्रेमचंद की कर्म भूमि है गौतम की निर्वाण यहाँ।
अमर शहीदों के गौरव से सज्जित स्वतंत्रता संग्राम।
महात्मा गाँधी पीजी कालेज-(1)

देश प्रेम के वाहक हमें मातृभूमि का मान बढ़े।
फिर से विश्वगुरु कहलाता यूँ भारत की शान बढ़े।
तन-मन-धन और वचन कर्म से आए सदा देश के काम।

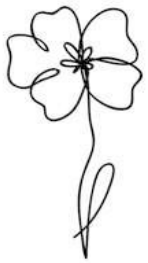

सरस्वती वन्दना

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ
तू स्वर की देवी है संगीत तुझसे,
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे,
तेरी शरण में हमें प्यार दे माँ॥
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
मुनियों ने समझी गुनियों ने जानी,
वेदों की भाषा पुराणों की बानी।
हम भी तो समझें हम भी तो जानें,
विद्या का हमको अधिकारी दे माँ॥
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
तू श्वेतवर्णी कमल पे विराजे,
हाथों में वीणा मुकुट सर पे साजे।
अज्ञानता के मिटा दे अंधेरे,
उजालों का हमको संसार दे माँ॥
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,

महाविद्यालय के बारे में

महात्मा गाँधी पी०जी० कालेज की स्थापना नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी के द्वारा हुई है। यह सोसाइटी सन् 1909 में स्थापित हुई थी जिसने 1909 में गोरखपुर हाई स्कूल की स्थापना की। इस सोसाइटी का प्रमुख उद्देश्य गोरखपुर जनपद एवं पूर्वांचल के छात्रों को प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध कराना था। नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी द्वारा स्थापित गोरखपुर हाईस्कूल महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर महात्मा गाँधी इण्टर कालेज के रूप में स्थापित हुआ। इसी क्रम में 60 वर्ष की अपनी शैक्षिक यात्रा पूरी करते हुए सन् 1969 ई० में राष्ट्रपिता के जन्मशती पर सोसाइटी ने महात्मा गाँधी इण्टर कालेज को विस्तारित करते हुए महात्मा गाँधी डिग्री कालेज की स्थापना की ताकि विज्ञान के क्षेत्र में पूर्वांचल के छात्र/छात्राओं को उच्च शिक्षा की उपलब्धता करायी जा सके।

महात्मा गाँधी महाविद्यालय ने अपनी यात्रा पूरी करते हुए 1992 में परास्नातक की यात्रा पूरी की। 1992 में रसायन विज्ञान तथा जन्तु विज्ञान के साथ यह महाविद्यालय महात्मा गाँधी परा स्नातक महाविद्यालय बन गया। कालान्तर में यह महाविद्यालय गणित, वनस्पति विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान में भी स्नातकोत्तर की शिक्षा देने लगा। अपने प्रगति के पथ पर यह महाविद्यालय विज्ञान में स्नातक स्तर पर शारीरिक शिक्षा, मनोविज्ञान, औद्योगिक रसायन, इलेक्ट्रानिक्स तथा कम्प्यूटर साइंस में भी शिक्षा प्रदान करने लगा।

वर्तमान में वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा गणित विभाग शोध केन्द्र के रूप में स्थापित है जिसमें छात्र/छात्राएँ दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय से शोध के लिये पंजीकृत हैं। इसके साथ-ही-साथ इन विभागों में विभिन्न

शोध परियोजनाएँ संचालित हो चुकी हैं, कुछ चल रही हैं तथा प्रायोजित है जिससे इस महाविद्यालय का समाज को अधिक से अधिक फायदा मिल सके। विज्ञान संकाय में ऊँचाइयों को छूने के बाद महात्मा गाँधी पी० जी० कालेज वर्तमान में वाणिज्य संकाय में तथा गृह विज्ञान (B.Sc P.H-D. Home Sience) में (B.Com.) भी विशेष ख्याति प्राप्त कर रहा है। कुशल तथा दूर द्रष्टा प्रबन्ध तन्त्र, योग्य तथा लगनशील शिक्षकों एवं अध्ययनशील और अनुशासित छात्रों के बदौलत यह महाविद्यालय पूर्वांचल में विशेष स्थान रखता है। यहाँ के पूर्व छात्र देश तथा विदेश में अपना डंका बजा रहे हैं।

वर्तमान में महाविद्यालय में सभी संकायों तथा विषयों में नेशनल एजुकेशन पालिसी (NEP) लागू है, एवं पाठ्यक्रम के अलावा महाविद्यालय में विभिन्न रोजगार परक एच्छिक कोर्स चल रहे हैं जो विद्यार्थियों के रोजगार में सहायक हैं।

प्रबन्ध तन्त्र—

महाविद्यालय को पैतृक संस्था नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी के तत्वावधान में गठित प्रबन्ध समिति के कुशल एवं सुयोग्य निर्देशन में महाविद्यालय का संचालन किया जाता है। वर्तमान प्रबन्ध समिति पदाधिकारियों तथा सदस्यों द्वारा प्रबन्धन कार्य किया जा रहा है। प्रबन्ध समिति के प्रबन्धक सचिव श्री मंकेश्वर पाण्डेय तथा अध्यक्ष श्री गंगादयाल जी हैं।

शिक्षक वर्गः—

नियमित शिक्षण, उच्चस्तरीय शोध, सुयोग्य प्रशासन, उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम, पाठ्येत्तर गतिविधियाँ तथा सहज सरल व्यवहार ही किसी महाविद्यालय के प्रगति के आंकलन का आधार है। इस दृष्टि से हमारा महाविद्यालय सदैव ही विशिष्ट स्थान प्राप्त करता है। गुणात्मक दृष्टि से महाविद्यालय का शैक्षिक स्तर उच्च श्रेणी का रहा है।

यहाँ पर कार्यरत उत्कृष्ट 58 शिक्षकों में से 52 पी.एच-डी. उपाधि से सम्मानित हैं। सभी पठन-पाठन के अलावा शोध कार्यों में भागीदारी करते हैं।

पुस्तकालयः—

केन्द्रीय पुस्तकालय तथा विभिन्न विभागीय पुस्तकालयों में पुस्तकें, शोध एवं अन्य पत्रिकायें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के ज्ञान वर्धन हेतु उपलब्ध है। बदलते पाठ्यक्रम के अनुसार नई पुस्तकें छात्र हित में प्रत्येक वर्ष क्रय की जाती है। पुस्तकालय में इन्टरनेट सुविधा तथा Inflibnet Center है द्वारा ई-लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान हेतु विभिन्न पत्रिकायें तथा दैनिक समाचार पत्र भी पुस्तकालय में उपलब्ध रहते हैं।

प्रयोगशालायेंः—

सभी विभागों में समुचित साधन सम्पन्न प्रयोगशालाओं के माध्यम से छात्रों को शिक्षित किया जाता है। साथ ही साथ उच्च शोध कार्य हेतु भी प्रयोगशालायें स्थापित है जिसमें छात्र तथा शिक्षक उच्चस्तरीय शोध कार्य कर रहे हैं। पी.एच-डी. हेतु विभिन्न विभागों में छात्र पंजीकृत हैं।

कैंटीनः—

छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते हुए महाविद्यालय के प्रशासनिक भवन के बगल में एक साफ-सुथरी कैंटीन की व्यवस्था की गयी है।

खेलकूद सुविधायें एवं गतिविधियाँः—

महाविद्यालय प्रांगण में विभिन्न खेलों के लिये सुविधायें उपलब्ध हैं। मुख्य रूप से बैडमिण्टन एथलेटिक्स, वालीबॉल, क्रिकेट तथा फुटबाल आदि खेलों की सुविधायें प्रांगण में उपलब्ध हैं।

महाविद्यालय में प्रत्येक वर्ष वार्षिक खेलकूद

प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

शैक्षिक भ्रमणः—

छात्र/छात्राओं को उनके पाठ्यक्रम के आवश्यकतानुसार विभिन्न केन्द्रों तथा शोध संस्थानों का ज्ञानार्जन हेतु भ्रमण कराया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना—

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की एक इकाई कार्यरत है जिसके कार्यक्रमाधिकारी डॉ० अनिल कुमार मिश्रा हैं।

इसी सत्र में पूर्व कार्यक्रमाधिकारी डॉ० आर० एन० शुक्ला ने NSS के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों को सम्पन्न कराया।

चार एक दिवसीय शिविर तथा एक सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया। NSS के द्वारा समाज में विभिन्न कुरीतियों के प्रति जागरुकता, साम्प्रदायिक सद्भावना हेतु रैलियाँ योग का महत्व, सूचना का अधिकार, जल तथा पर्यावरण सम्बन्धित कार्यों के प्रति जागरुकता फैलाते हुए छात्र/छात्राओं का व्यक्तित्व विकास किया जाता है।

प्रशिक्षण एवं सेवा योजक इकाईः—

महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं को शिक्षा के साथ-साथ दक्षता विकसित करने, जिससे आगे चलकर अपने लिये अनेक रोजगार के अवसरों का सृजन कर सकें तथा देश के उत्थान में योगदान कर सकें, के ध्येय से महाविद्यालय में प्रशिक्षण तथा सेवायोजन इकाई का गठन किया गया है। इस इकाई का मुख्य कार्य, रोजगार से सम्बन्धित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों, व्याख्यानों तथा सेवायोजन के अवसर प्रदान करना है।

अनुशासन—

किसी भी संस्था का विकास वहाँ के अनुशासन व्यवस्था पर निर्भर करती है। महाविद्यालय में अनुशासन बनाये रखने के लिये अनुशासन समिति का गठन किया गया है जिसमें डॉ० महेश यादव मुख्य नियन्ता तथा डॉ० आलोक रंजन उप मुख्य नियंता तथा महाविद्यालय के कई अन्य शिक्षक नियन्ता के रूप में कार्य करते हैं। अनुशासन समिति के सभी सदस्यों तथा महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्रोंओं के सहयोग से महाविद्यालय का अनुशासन सर्वोत्तम है।

❖❖❖❖❖

* IQAC speaks..... *

Prof. Namita Kumar

As per the NAAC recommendations, the Internal Quality Assurance Cell (IQAC) was firstly established on 10th January 2014, and respectively reconstituted in the years 2017, and 2022, as per their revised guidelines. Under the skillful guardianship of our Manager, Revered Sri Mankeshwar Nath Pandey and capable Chairmanship of our Principal, Hon'ble Dr A.K. Singh, the IQAC is a fully functioning body, and certainly a step towards excellence. The IQAC team of the

college believes that this Cell is a valued addition to the institution's resources and plays a key role in its development. Being nominated as the Director/coordinator of IQAC since 2017, and getting the College accredited in 2018, the pertinence of maintaining the momentum of quality consciousness was crucial to ensure and conceive a quality culture at the institution, with appropriate structure and processes, and with enough flexibility to meet the diverse needs of the stakeholders. It has been far well realised that quality enhancement is a continuous process and at this point, the IQAC becomes an integral part of the institutions' system. Consequently working towards realisation of the goals of quality enhancement, for performance, evaluation and quality up-gradation, the meetings of IQAC are conducted periodically and proceeding of meetings are maintained. For conscious, consistent and catalytic improvement in the overall performance of the institution, we have channelized efforts and measures of the institution towards promoting its holistic academic excellence. The potential growth of a youngster improves when we provide education through developmental approach. Therefore, we believe in promoting independence, love for learning and sense of social responsibility in the institution. Glorified as a prestigious Science College of Purvanchal, ever since its inception, the management and teachers have been striving hard to comprehend the broad significance of education while designing our way of instruction. We guide our students to sharpen their skills and inculcate in them, a positive attitude system to shape their build, outlook and conduct, thus providing a strong foundation for them to face the challenges of life. We provide the support of a strong team of faculty members, who completely put their efforts to motivate our students and guide them to progress at every step, and hence nurturing champions, who, with intellectual brilliance and ethical excellence, emerge out as leaders with a difference! The curious minds here, are cultivated in a balanced and healthy environment of learning, thus motivating the students to think beyond curriculum. Nominated as a Mentor for NAAC Accreditation Process for Higher education Colleges of Gorakhpur Zone, I attended the 'Training programme of Mentors' held at Lucknow in January, 2020. During the interaction session, I realised that though most of the colleges do have an lnternal Quality Assurance Cell, but their perception and knowledge about its functioning is still limited. After joining series of workshops, my realisation turned into belief. I do look forwarded into guiding these institutions at whatever level, through their NAAC accreditation. We organise events to instil confidence in the young minds to create leadership qualities. We discover talents, we nurture them and enrich with experiences in the college. We believe that good career is important but a good character is paramount. It has been the effort of the college to work with all stakeholders such as parents, staff and students to produce happy confident citizens who enjoyed their college life and leave the organisation with great experiences and memories.

❖❖❖❖❖

सत्र 2021-22 में महाविद्यालय के लिए गौरवशाली पल

- टी. डी. कालेज, जौनपुर के शस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष **डॉ० अनिल कुमार सिंह** ने उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के विज्ञापन संख्या 49 से चयनित होकर महाविद्यालय के प्राचार्य का पदभार ग्रहण किया।
- इस महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान की विभागाध्यक्ष **डॉ० शैल पाण्डे** ने उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के विज्ञापन संख्या 49 से चयनित होकर डी. ए. वी. कॉलेज, गोरखपुर के प्राचार्या का पदभार ग्रहण किया।

महाविद्यालय के निम्न आठ एसोसिएट प्रोफेसर प्रोन्नत होकर प्रोफेसर बने।

डॉ० शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
डॉ० उमेश कुमार गुप्ता
डॉ० शैल पाण्डेय
डॉ० निखिल कुमार
डॉ० नमिता कुमार
डॉ० अलोक कुमार श्रीवास्तव
डॉ० अमरनाथ ठाकुर
डॉ० अवनीश

महाविद्यालय के निम्न दो असिस्टेंट प्रोफेसर प्रोन्नत होकर एसोसिएट प्रोफेसर बने।

डॉ० महेश यादव
डॉ० चन्द्र प्रकाश सिंह

महाविद्यालय के निम्न पाँच असिस्टेंट प्रोफेसर प्रोन्नत होकर सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर बने।

डॉ० संगीता श्रीवास्तव
डॉ० आर० एन० शुक्ला
डॉ० अनिल कुमार मिश्रा
डॉ० अनीता कुमारी
डॉ० अलोक रंजन

उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के विज्ञापन संख्या 50 द्वारा चयनित होकर महाविद्यालय में निम्न 4 असिस्टेंट प्रोफेसर ने पदभार ग्रहण किया।

डॉ० जितेन्द्र कुमार,	प्राणी विज्ञान विभाग
श्री विशाल गुप्ता,	वनस्पति विज्ञान विभाग
श्री विकास कुमार सिंह,	रसायन विज्ञान विभाग
श्री रणधीर कुमार,	रसायन विज्ञान विभाग

महाविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ० संजय गौतम का चयन लखनऊ विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर हुआ।

❖❖❖❖❖

संपादकीय

दो वर्षों के करोना काल के पश्चात हम सभी अभी अभी उभरे हैं । इस दौरान हमने बहुत सारी त्रासदी झेली है तथा किसी न किसी निकट संबंधी को खोया है। इस दौरान बहुत से लोगों की नौकरियाँ चली गई, स्कूल तथा कॉलेज बंद हो गए तथा बहुत से लोग अवसाद के शिकार हो गए। इतनी बुराइयों के बाद भी करोना कॉल की कुछ अच्छाइयाँ रहीं। कुछ ऐसे सबक हमने सीखे जिनको हम सब भुला बैठे थे। इस दौरान हमने सीमित संसाधनों में रहना सीख लिया, हमने स्वस्थ का महत्व तथा एक दूसरे की तकलीफ में साथ देना सीखा। इस त्रासदी ने शिक्षा तथा रोजगार के क्षेत्र में एक नया आयाम दिया। हम सब ने वर्क फ्राम होम तथा वर्चुअल क्लास को अच्छी तरह से सीख लिया। कुल मिला-जुला कर इस त्रासदी ने जीने का हुनर सिखा दिया। 'आपदा में अवसर' प्रधानमंत्री जी का यह सूत्र वाक्य हम सब के लिए प्रेरणा स्रोत रहा। इस त्रासदी ने हमें सिखाया कि **जीवन में कितनी भी कठिनाई हो हमें चलना होगा, सूरज की तरह हर रोज निकालना होगा, मन न हो तो भी चलना होगा।** इस मंत्र को यदि आप अपने मन में बिठा लेते हैं तथा आपने जो भी लक्ष्य तय किया है उसके लिए कठिन परिश्रम करते हैं तो आपको सफल होने से कोई नहीं रोक सकता चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हों।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका दीपशिखा 2022 के इस अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए हम अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं क्योंकि हमारे छात्र-छात्राएं साहित्य वर्ग के ना होने के बावजूद अनेकों ज्ञानवर्धक रचनाएँ प्रकाशित कर रहे हैं। यद्यपि स्थानाभाव अथवा परिस्थितिवश कुछ रचनाएँ इस अंक में स्थान ना पा सकी उसके लिए खेद है। संपादक मंडल महाविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य तथा समाज के प्रत्येक नागरिक के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना अपना पुनीत कर्तव्य समझता है जो महाविद्यालय की प्रगति के हर संभव मदद के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। इस अंक को पूर्ण करने में शैलेश कुमार फोटोग्राफर तथा कस्तूरी प्रेस गोरखपुर विशेष धन्यवाद के पात्र हैं

अंत में दीपशिखा 2022 के संरक्षक एवं प्राचार्य डॉ० अनिल कुमार सिंह जी तथा महाविद्यालय के प्रबंधक श्री मन्केश्वर नाथ पांडे जी का हार्दिक आभार जिनके कुशल निर्देशन में समूचा महाविद्यालय उन्नति के रास्ते पर अग्रसर है तथा उनके निष्ठावान नेतृत्व के कारण ही दीपशिखा के इस अंक का आना संभव हो सका है।

धन्यवाद

डॉ० अवनीश
(मुख्य संपादक)

अनुक्रमणिका

क्रम सं०		लेखक/लेखिका	पृष्ठ सं०
01	Impact of Social Media on Body Image & Food Choices in Youth	Dr. Priyanka Srivastava	12
02	Educational Technology is necessay for the implementation of NEP	Dr. Alok Ranjan	14
03	International Mother Earth Day 2022	Dr. Anita Kumari	17
04	संस्मरण/यात्रावृतांत पोखरा यात्रा	डॉ0 अवनीश	18
05	उल्टी यात्रा (पोते से बाबा तक)	डॉ० मनोज कुमार श्रीवास्तव,	21
06	औरत—एक परिचय	अर्चना यादव बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	23
07	चिंता ने चिता से मुस्कुराते हुए कहा	किया सैनी बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	23
08	सुवचिार	प्रमील कुमार मिश्र प्रयोगशाला सहायक	23
09	आर्थिक व्यवस्था की मूलाधार—भारतीय कृषि	प्रिन्स पाण्डेय (B.Com 2nd Year)	24
10	कोरोना से बचाव	अंकित शुक्ला (B.S-C. 3rd Year)	25
11	लकीरें भी बड़ी अजीब होती है		25
12	शिक्षक	अंकित शुक्ला (B.Com 3rd Year)	25
13	सारा जग रोशन हो जायेगा		26
14	झुको		26
15	करती रह खुद में बस निखार	प्रतिमा-मिश्रा बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	26
16	भारत की राजनीति और राजनीतिक विकास	श्रेयांशी सिंह बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	27
17	फेल भाई	द्वीप नारायण बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	27
18	माँ-पापा पर कुछ पंक्तियाँ	प्रियांशी कसौधन बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	28
19	मुस्कान	कुमारी गुंजन सिंह एम.एस-सी. चतुर्थ सेमेस्टर	28
20	Chemistry facts	Divya Singh M.S-C. II Sem	29
21	'MOTIVATIONAL POEM'		29
22	World War III	Komal Rauniyar B.S-C. (II Year)	30
23	ये बात समझ में आई नहीं		30
24	Paragraph on Nature		31
25	Failure Is Contagious		32
26	INTO THE COSMOS	—Ravikant	32
27	फिर बचपन की छाँव में	डॉ० सी० पी० सिंह एसोसिएट प्रो०	33
28	प्यारी गिलहरी	रजनी श्रीवास्तव एम.एस-सी. चतुर्थ सेमेस्टर	33
29	STORY OF SUCCESS	Priyanshu Panday B.Sc Ist Year	34
30	कौन किसके साथ है ?	शिवानी चौरसिया बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	35
31	बढ़ती बेरोजगारी	प्रिन्स पाण्डेय बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	36
32	गजल	सत्यम पाण्डेय 'देव एम.एस-सी.चतुर्थ सेमेस्टर	36
33	वर्षा	रजनी श्रीवास्तव एम.एस-सी. चतुर्थ सेमेस्टर	36
34	STORY OF PhD STUDENT (Joke)	Jagriti Dubey M.Sc-4th Sem	37
35	बढ़ती बेरोजगारी	अभय सिंह बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	37
36	जो बीत गई सो बात गई		

क्रम सं०		लेखक/लेखिका	पृष्ठ सं०
37	ये कलम नहीं दास्ताँ है मेरी		38
38	दोस्ती		38
39	बचपन	उत्कर्ष सिंह बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	38
40	भूख तो भूख है (प्रेरणा कथा)	अर्पिता पाण्डेय बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	39
41	दिमाग की ताकत	अनुज श्रीवास्तव (बी.काम IInd सेमेस्टर)	40
42	एक अजन्मी बेटी की चिट्ठी माँ के नाम!	मधु पाण्डेय (B.Com 2nd Year)	41
43	महिला सुरक्षा	स्नेहा पाण्डेय (B.Sc 1st Year Semester II)	42
44	नारी शक्ति	यश श्रीवास्तव (B.Com 3rd Year)	42
45	बहुत कुछ सीखना है	यश श्रीवास्तव (B.Com 3rd Year)	42
46	गंगा	प्रिया मिश्रा (B.Sc. 1st Year Semester II)	43
47	Essay on my teacher	आयुष श्रीवास्तव (B.Com 3rd Year)	43
48	"Nothing is Everything"	प्रिन्स पाण्डेय (B.Com 3rd Year)	44
49	''प्रेरणादायक लेख'' (संकलन)	रोशनी गुप्ता (B.Com 1st Year)	45
50	मेरी सोच	सुनिधि श्रीवास्तव (B.Com 1st Year)	46
51	दहेज एक कुप्रथा	अमृता यादव बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	47
52	दहेज एक कुप्रथा	सुप्रिया कसौधन बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	47
53	माँ और गुरु	मरियम नफीस बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	47
54	''आँसू''	शाम्भवी पाण्डेय एस.एस-सी. प्रथम वर्ष	47
55	हिन्दी से है हिन्दुस्तान	अमिषा पटेल बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	48
56	College Days	आयुष श्रीवास्तव (B.Com 2nd Year)	48
57	कैसा है ये साल नया	दीप नारायण बी.एस.सी. (तृतीय वर्ष)	49
58	विश्वास का जादू	दिव्यता पाण्डे एम.एस-सी. द्वितीय सेम	49
59	''शिखर की यात्रा''	अर्पिता पटेल बी.एस-सी. (प्रथम वर्ष)	50
60	''माँ''	आयुष श्रीवास्तव (B.Com 2nd Year)	50
61	उड़ान	श्वेता यादव (B.Com. 1st Year)	51
62	''दहेज एक प्रथा नहीं भीख''	नारायण कुशवाहा (B.Com 2nd Year)	52
63	''समाधान''	आयुष श्रीवास्तव (B.Com 2nd Year)	52
64	''माँ जैसा कोई नहीं''		53
65	Interesting Facts	अंकित सैनी (B.Com 3rd Year)	53
66	Educate a girl child	Vaidehi Singh (B.Com 1st Year)	54
67	Poem Commerce	Vaibhav Elani (B.Com 1st Year)	54
68	''विचार''		55
69	''जिन्दगी''		55
70	जिन्दगी का दस्तूर	अनुपमा शर्मा (B.Com 1st Year)	55
71	All The Time	राहुल कुमार गुप्ता (B.Com-I)	56
72	ऐ जिन्दगी	उत्कर्ष सिंह बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	56
73	Success Stories	Dr. Gaurav Srivastav	57
74	कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती	कवि सोहन लाल द्विवेदी	59
75	शिक्षक परिवार		60
76	महाविद्यालय प्रबन्ध समिति		63
77	अखबारों की नजर में महाविद्यालय की गतिविधियाँ		64

Impact of Social Media on Body Image & Food Choices in Youth

Dr. Priyanka Srivastava
Assistant Professor (Home Science)

Do you use social media? Most of us would say 'YES'. So, what is its effect on youth? Have you ever thought about this?

We know that the Social Media content is poorly regulated and targeted. The use of social media is generally associated with increased odds of skipping breakfast and consuming SSB and energy drinks. Research has shown that sedentary activity, particularly screen time, is associated with obesity and unhealthy eating behaviors such as consumption of SSB and energy drinks among adolescents. Children who have higher online engagement with food brands and content are more likely to consume unhealthy foods and drinks. And as a catalyst the Food and beverage organizations are exploiting young adults' social vulnerabilities using image-based marketing tactics, including peer ambassadors and celebrity endorsements designed to sell an illusion of health, beauty and success from products they are offering. Evidence is now emerging of the negative consequences of such content for eating habits, health and body image concerns, particularly in youth. Research highlights the need to include social media in regulations and policies designed to limit children's exposure to unhealthy food marketing.

Social media companies have a greater role to play in protecting children's health and mental condition from such a vulnerable Internet era.

Let's articulate the facts in numbers (source-Ofcom report)

- Over 90% of adolescents have at least one social media account
- 81% use more than 1 social networking site
- 64% use social media 2 hours/day. 48% take selfies at least once/fortnight. 62% edit photos.
- 90% Facebook user check 3-5 times daily. 57% check Instagram 3-5 times/day
- 22.5% reported seeing their favorite food brands advertised on social media. 6% reported hash-tagging food and beverage brands on any social media.
- Majority (81.5 %) of teens in the US reported daily use of social media. Students who engaged in unhealthy eating behaviors were more likely to use social media at higher levels than students who refrained from unhealthy eating behaviors.
- Students who reported using social media for <1, 2 and e"5 hours/day were at 1·67, 1·90 and 3·29 times the odds of consuming sugar-

sweetened beverages and energy drinks, respectively.

Danger of Social Media

What we know about teens

They are constantly trying to define themselves.

They crave positive feedback to help them see how their identity fits into their world.

What we know about teens

How is this harmful

The danger exists in the possibility of a very public rejection because negative feedback is there for anyone andeveryone to see.

Another danger is that teens askfor feedback without firstlearning that not everyone willrespond in a supportive way.Imagine how this could furtherinfluence body image.

They use social media for this feedback... but they are looking in a dangerous place

What needs to be done?

Social Media is considered an essential platform for health professionals to reach and engage with young adults to encourage healthy behaviors - In practice, health professionals need to consider discussing the influence of SM on BI with their young adult clients, including when engaging in health promotion campaigns.

Social Media campaigns should combat the narrow image of beauty – catering to the majority of women (and men) and redefining what "beautiful" actually means.

Future research should consider how to best engage with different types of social media users and how to target their social media more effectively to support, facilitate social and peer-to-peer support for young adults in making healthier choices. More efforts are needed to better understand the impact of social networks on eating behaviors and risk of poor health.

Reducing youth's screen-related sedentary time and heightening our efforts with messages on healthy food choices are important public health targets to achieve.

Focus on a positive relationship with food and exercise more.

Takeaways

- Social Media engagement and exposure to image-related content have a negative impact on body image and food choice in healthy young adult population groups who are vulnerable to social media influence.
- Viewing idyllic images of celebrities, peers, food, fitness and fashion, engaging in negative behaviors (body fat talk, reassurance seeking), or appearance comparisons online are specific exposures that may increase these risks.
- The pressure young adults feel to present an ideal image of themselves alters their food behavior and health eventually.

"Be the change you want to see in the World"

— Mahatma Gandhi

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

Educational Technology is necessay for the implementation of NEP

Dr. Alok Ranjan
Assistant Professor, Departmen of Botany

The advancement in science and technology and its applications have yielded rich dividends in almost all matters related to the organisation and management of the processes and products of education. This applied aspect of technology the field of education is known as Educational Technology. It has a tremendous capacity to provide the best, possible output in the process of education for both teachers and learners.

Concept:

Educational Technology is quite comprehensive and wide in terms of its nature as well as form it is concerned with all the variables, phases, levels and aspects of teaching-learning process. It works for the overall planning and organisation of the systems or of sub-systems of education. It helps all those who are connected directly or indirectly to the processes and products of education. It teaches the teachers the art of teaching, the learners ones, the science of learning, the education planners—the structure of planning and the administrators or managers - the skill of managing or administering the lask of teaching and learning. It works for the individualisation of instructions as well as for improving the group dynamics of the classroom. It reaches to the individuals, groups and the masses, priveledged or unpriviledged through the media and means. The use of mass-media for educational pusposes through radio, television. tele-text, computer controlled devices and correspondence courses have given new dimensions to the application and scope of educational technology. Concepts like institutional technology, teaching technology behviour technology connot be equated with educational technology. These are constituents and subsystems of educational technology. Educational technology, in its application and utilization. always tries to make a wise use of all the components and sub-systems at its disposal at a given situation for the effective realisation of the stipulated educational objectives.

Scope

It is because of its vastness, it can be said that there is vast scope of Educational Technology. They are as follows

1. **Analysis of the process of teaching and leaning:** It tries to discuss the concept of teaching, analysis of the teaching process, variables, phases, levels, theories, principles and maxims of teaching, concept and the relevance of the theories of learning, the relationship between teaching and learning, the integration of the theories and principles of teaching as well as learning for attaining optimum educational purposes
2. **Spelling out the educational goals or objectives:** Educational technology tries to discuss the topics such as identification of educational needs and aspirations of the community, survey of the resources available for the satisfaction of these needs and aspirations, analysing broadly the educational objectives also the specific classroom objectives of teaching and

learning etc.

3. **Development of the curriculum:**
This aspect of educational technology is concerned with the designing of a suitable curriculum for the achievement of the stipulated objectives. It may be the designing of certain contents and organising them in a suitable framework to bring out more effective instruction.

4. **Development of teaching learning material:**
This is concerned with the production and developments of suitable teaching learning material related to objectives, curriculum and available resources. Here it tries to develop techniques of software programmed learning material, mass media instructional material personalised system of instruction, preparation of lesson plans etc.

5. **Teacher preparation or teacher training:**
Since in any teaching learning process, teacher is the key figure, therefore Educational Technology takes care of the proper preparation of teachers for exercising their complex responsibilities. For this purpose it includes topics like models of student teaching, micro tracking, team teaching, classoom interaction etc.

6. **Development & selection of teaching learning strategies and tactics :**
This aspect deals with the central problem of teaching learning act. Here educational technology, tries to deal and describe the ways and means of discovering, selecting and developing suitable strategies and tactics of teaching in terms of the optimum learning for gaining optimum results.

7. **Development , selection and use of the appropriate audio-visual aids:**
Teaching learning is greatly influence and benefitted by the use of appropriate teaching learning aids. It discusses the use of various audio-visual aids for the educational purpose. It deals with audio-visual methods of presentation and dissemination of information, their proper storage and retrieval, and consideration about their cost-effectiveness and effective utilization.

8. **Effective utilization of the hardware & mass-media:**
Various instruments, gadgets and communication devices play an effective role in the attainment of educational objectives. Educational technology tries to describe these resources in terms of their functionality and applicability in a particular teaching-learning situation

9. **To work for the effective utilization of the subsystem of education:**
Educational technology considers education as a system operating in a systematic and scientific way for the achievements of educational objectives for this, it tries, to include topics dealing with the theory and principles of systems approach, explaning education as a system. It also includes the study of different sub-systems-the organisation and management of the system in an effective way by specifying the respective roles of the man, machine and media in relation to the purposes of teaching and learning.

10. **To provide essential feedback and control though evaluation:**
Educational technology exercises control over teachig-learining process by planning suitable tools for continuous evaluation of teaching-learning activities. Such

evoluation provides on appropriate feedback to the learners as well as teachers for bringing necessary improvements.

Significance :

Educational technology has been contributing a lot to the formal as well as informal education in the country. Some significant developments are as follows:

1. Radio broadcasts of educational programmes have gained momentum. These well-planned programmes are broadcasted throughout the country for both in school and out of school groups.
2. Television programmes, telecast lessons are also important educational mediums in India. With the advent of satellite services like EDUSAT project, there has been a beginning of a series of innovative and constructive television programmes for national development and for educating the masses living, in remote, rural or under developed areas.
3. The in-service teacher training courses by using a multi-media package, developed by the Centre of Educational Technology of NCERT has proved to be very helpful in the training and re-training of the large number of school teachers through the proper rise of mass media.
4. Another application of Educational Technology is the distance education which involves use of a combination of media for the purposes and provides the facilities for out-of school education in a very flexible way at any place and at any time in the life of a person.
5. Another major area where Educational Technology helps is language instruction. Besides producing material for language instructions through mass media, it has contributed towards the development and functioning of the language laboratories to teach foreign languages.
6. Another beneficiary in this regard is correspondance education. Well planned and systematically developed correspondence courses are being provided by a number of universities. In these courses students may be approached through four media - instructional materials, student response sheets, personal contact programmes and radio or telecast instructions. The teaching is provided through specially prepared lessons.
7. Another use for which educational technology is being put is concerned with preparation, development and utilization of audio-visual material and handling as well as maintenance of the hardware appliances and sophisticated gadgets.
8. In the latest trend, educational technology is proving its worth by uitilizing the services of computers and advanced form of ICT technology in the field of education Use of these improve the products and process of education. In the developed forms of computer and ICT technology, it can help the teachers, learners, researchers, administrators and educational planners to get access to valuable treasures of knowledge.

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

International Mother Earth Day 2022

Dr. Anita Kumari
Assistant Professor, Department of Botany

Mother Earth is our one and only home. It is our moral responsibility to conserve and save our 'Mother Earth'. Earth Day aims to "build the world's largest environmental movement to drive transformative change for people and the planet." The movement's mission is "to diversify, educate and activate the environmental movement worldwide." Earth Day is celebrated by appreciating and respecting the natural world. Earth Day celebrations have played an important role in raising awareness around environmental issues ever since.

The first Earth Day was held on April 22, 1970. S. G. Nelson developed the idea for Earth Day for environmental protection. Since 1970 'Earth Day' is celebrated every year on April 22. It achieveda rare political alignment, enlisting support from Republicans and Democrats, rich and poor, urban dwellers and farmers, business and labor leaders. By the end of 1970, the first Earth Day led to the creation of the United States Environmental Protection Agency and the passage of other first of their kind environmental laws, including the National Environmental Education Act, the Occupational Safety and Health Act, and the Clean Air Act. Two years later Congress passed the Clean Water Act. A year after that, Congress passed the Endangered Species Act and soon after the Federal Insecticide, Fungicide, and Rodenticide Act. These laws have protected millions of men, women and children from disease and death and have protected hundreds of species from extinction.

As 1990 approached, Earth Day went global, mobilizing 200 million people in 141 countries and lifting environmental issues onto the world stage. As the millennium approached, peoples agreed to spearhead another campaign, this time focused on global warming and a push for clean energy. With 5,000 environmental groups in a record 184 countries reaching out to hundreds of millions of people, Earth Day 2000 built both global and local conversations, leveraging the power of the Internet to organize activists around the world. Earth day is a reminder that "the healthier our ecosystems are, the healthier the planet – and its people". The UN celebrates International Mother Earth Day through the Harmony with Nature initiative, a platform for global sustainable development that celebrates annually an interactive dialogue on topics such as promoting a holistic approach to harmony with nature, and an exchange of national experiences regarding criteria and indicators to measure sustainable development in harmony with nature.

The theme for International Mother Earth Day 2022 is 'Invest in our Planet'. "This is the moment to change it all — the business climate, the political climate, and how we take action on climate. Now is the time for the unstoppable courage to preserve and protect our health, our families, our livelihoods… together, we must 'Invest In Our Planet'," ❖❖❖❖❖

संस्मरण/यात्रावृतांत पोखरा यात्रा

डॉ0 अवनीश
विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग

इस वर्ष की शुरुआत से एम.एस-सी. वनस्पति विज्ञान अंतिम वर्ष के छात्र तथा छात्राओं ने हर वर्ष की भांति शैक्षणिक भ्रमण के लिए हम सभी आग्रह करना शुरू कर दिया था। परंतु बी.एस-सी. प्रथम वर्ष की सेमेस्टर तथा द्वितीय और तृतीय वर्ष की वार्षिक पाठ्यक्रम होने के कारण यह सम्भव नहीं लग रहा था। किंतु एम.एस-सी. तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा समाप्त होने के पश्चात बी.एस-सी. की वार्षिक परीक्षाएं शुरू हो गईं। एम.एस-सी. अंतिम सेमेस्टर के छात्राओं ने शैक्षिक भ्रमण का कार्यक्रम बनाकर हम शिक्षकों तथा प्राचार्य जी से अनुमति ले लिया। पहाड़ों की वनस्पतियों के अध्ययन हेतु नेपाल पोखरा तथा के आस पास के जगहों के भ्रमण का कार्यक्रम तय हुआ। एम.एस-सी की एक छात्रा के बड़े भाई आनंद सिंह जो कि एक ट्रेवेल एजेंसी चलते हैं, ने किफायती दर पर हम लोगों के 3 दिनों के शैक्षणिक भ्रमण के कार्यक्रम तय किया। छात्रों के जिद के आगे हम शिक्षकों का मन ना होते हुए भी इस टूर में जाने को तैयार हुए। हम शिक्षकों में से मैं, डॉ० आलोक रंजन, डॉ० क्षमता श्रीवास्तव, डॉ० मधुलिका श्रीवास्तव तथा डॉ० मंजुला श्रीवास्तव एम.एस.-सी. अंतिम सेमेस्टर की छात्राओं के साथ टूर में गए। टूर के लिए हम सब 1 मई 2022 को प्रात: 6:00 बजे महाविद्यालय प्रांगण में एकत्रित हुए। वहाँ से हम लोग लगभग 7:00 बजे सोनौली बॉर्डर के लिए रवाना हुए। बॉर्डर पर चेकिंग के बाद हम लोग नेपाल के अंदर भैरवाँ में पहुंचे जहां पर कुछ कागजी कार्यवाही पूरी हुई तथा ड्राइवर ने 3 दिन का भड़सार लिया। भड़सार नेपाल में गाड़ी प्रवेश करने का एक प्रकार का टैक्स होता है। यहां पर जिनको नेपाली पैसा लेना था उन्होंने भारतीय पैसे को नेपाली पैसे में परिवर्तित कराया। भारत का एक रुपया नेपाली एक रुपए साठ पैसे के बराबर होता है। कुछ लोगों ने यहाँ नेपाली सिम लिया क्योंकि यहाँ भारतीय सिम काम नही करता है। इस प्रक्रिया को पूरा करने में नेपाल बॉर्डर पर लगभग 1 घंटे लग गए। यहां से हम लोग 11:00 बजे पोखरा के लिए रवाना हुए। लगभग 10 किलोमीटर चलने के पश्चात ड्राइवर को पता चला कि उसका ड्राइविंग लाइसेंस बॉर्डर पर ही छूट गया है तो पुन: हम सबको वहाँ पर आना पड़ा।

ड्राइवर ने ड्राइविंग लाइसेंस लेने के बाद अपनी टेंपो ट्रैवलर गाड़ी में डीजल भरवाया जो कि भारत से लगभग रु० 10 सस्ता था। नेपाल में पुलिस को प्रहरी कहते हैं। प्रहरी की व्यवस्था जगह-जगह थी जो गाड़ियों को चेक कर रहे थे । वहां पर गाड़ियों को चेक करने के बदले कहीं कहीं पर कुछ प्रहरी ड्राइवर से अवैध पैसे भी ले रहे हैं।

रास्ते में सभी छात्र छात्राएं गाना गाते बजाते हुए चल रहे थे । सब बहुत आनंदित थे। बॉर्डर से पोखरा की दूरी लगभग 190 किलोमीटर है। कुछ ही दूर चलने के बाद पहाड़ शुरू हो जाते हैं । जहां से पहाड़ शुरू होता है वह जगह बुटवल है। पहाड़ को देखकर सभी छात्राएं आनंदित हो गई। बुटवल से पाल्पा होते हुए सिद्धार्थ राजमार्ग से पोखरा जाना था।

सड़क थोड़ी खराब थी इसलिए वहां पर बहुत ज्यादा धूल उड़ रही थी और बस की रफ्तार भी धीमी थी। हम सब बुटवल के जैसे ही आगे निकले सामने पहाड़ों की एक पूरी श्रृंखला दिखाई दे रही थी । हल्की चढ़ाई के साथ शुरू हुआ पोखरा जाने का सफर। एक तरफ तो आसमान को छूते पहाड़ तथा दूसरी तरफ पाताल में समा जाने का एहसास कराती खाई थी। हर कदम पर रोमांच था जो हमें प्रकृति के और करीब लेकर पहुंच रहा था। रास्ते में सड़क के किनारे गहराई में टिनाउ नदी बहती है जो ऊपर से देखने में बहुत ही रमणीक लग रही थी। रास्ते में छोटे-छोटे झरने भी दिख रहे थे। छात्रों को यहाँ की टोपोग्राफी समझने में बहुत ही आसानी हो रही थी। रास्ते में छोटे-छोटे गांव भी पड़ रहे थे जिनमें जगह-जगह पहाड़ों को काटकर लोग खेती कर रहे थे। हम सब इन जगहों को करीब से देखे तथा पट्टीदार खेती और सीडी नुमा खेती के विधियों के बारे में जाने। इन जगहों पर चावल, मक्का तथा विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती की जा रही थी। बुटवल के आगे रामापीथिकस पार्क मिला। शाम के समय बस पंचर हो गई जिसका फायदा उठाते हुए हम सब ने आसपास के वनस्पतियों का अध्ययन किया तथा वहाँ पर हम लोगों को विभिन्न प्रकार के आवृत्तबीजी, अनावृतबीजी तथा थैल्लोइड पौधे मिले । यहाँ पर मारकेनशिया तथा इक्विसीटम का संग्रह किया। बस को ठीक होते होते अंधेरा ही गया। पहाड़ों पर बने घरों के भीतर के बल्ब जल उठे थे। पहाड़ों पर चलते चलते ऐसा एहसास हो रहा था कि जैसे आसमान के तारे इन पहाड़ों के नीचे और ऊपर उतर आए हों। इनकी झिलमिल रोशनी सुंदरता बिखेर रही थी।

हम सब पोखरा रात्रि करीब 8:30 बजे पहुंचे। यह शहर और भी खूबसूरत था। शहर की सीमा पर प्रहरी ने वाहन चेक करने के बाद अंदर आने दिया। लगभग 15 मिनट चलने के पश्चात हम सब पहले से तय होटल, जिसका नाम कुंजा होटल था, पहुंचे। होटल कुंजा लेक व्यू रोड पर स्थित है। यह होटल फेवा लेक के ठीक सामने था तथा मैं और आलोक जी कमरा नम्बर 401 में रुके जिसके बालकनी से फेवा लेक का दृश्य बड़ा ही मनोरम लग रहा था। पहाड़ियों से घिरे ताल का यह नजारा बहुत ही सुंदर था।

इस होटल का भोजनालय पाँचवे तल पर था। जहाँ पर हम सब ने अपनी अपने रुचि के अनुसार भोजन लिया। उस भोजनालय में एक विल्लिर्डस का बोर्ड लगा था जिस को सब लोगों ने खेला। भले ही खेलना न आता हो फिर भी सबने फोटो खिंचवाया। रात्रि भोज के पश्चात हम सब लेक व्यू रोड पर टहलने निकले। रात्रि ज्यादा होने के कारण सभी दुकाने बन्द हो गई थी। हम सब वापस 11 बजे रात्रि तक अपने कमरों में आकर सो गए।

अगली सुबह हम सब नाश्ता करने के पश्चात् पोखरा भ्रमण पर निकले जिसकी शुरुवात विंध्यवासिनी मंदिर से हुई। यह मंदिर बहुत ही भव्य है और कहा जाता है कि यहाँ के राजा सिद्धि नारायण शाह ने इसे बनवाया। इस परिसर में हम लोगों को कुछ ऑर्किड्स , कुछ आवृतबीजी पौधे तथा कुछ ब्रयोफाइट मिले। हमारा दूसरा पड़ाव चमेरे गुफा था। यह चमगादड़ों कि गुफा है। इस गुफा में हम सब ने टिकट ले कर प्रवेश किया। यह गुफा बहुत गहरी , अंधेरी, और खतरनाक थी। टिकट काउंटर पर इमरजेंसी लाइट मिली थी जिसकी मदद से गुफा में प्रवेश करना था। गुफा के अंदर काफी नमी थी तथा

बहुत सारे चमगादड़ उल्टे लटके हुए थे। आगे गुफा और संकरी और खतरनाक थी। इस लिए हम सब वापस आ गए। गुफा के आस पास हम लोगों को पीपली तथा कुछ आर्किड्स मिले।

इसके बाद हम सब सेती रिवर गार्ज गए। वहाँ सुन्दर बगीचे से गुजरते हुए नदी का पानी निकलता है।

यहाँ का पानी दूध जैसा सफेद था। इस सेति रिवर गार्ज के नीचे से कंदराओं से होते हुए पानी निकल रहा था। यहाँ नमी ज्यादा होने के कारण सिलेजिनेला का अच्छा खासा कलेक्शन हो गया। इसी के नजदीक छात्राओं ने पुराने पोखरा में खरीदारी की जिसकी वजह से वहाँ का म्यूजियम देखना रह गया। इसके बाद हम सब डेविस फॉल गए। समयाभाव के कारण अन्य रमड़ीक स्थल जैसे महेंद्र गुफा, गुप्तेश्वर गुफा, आदि छूट गए।

डेविस फॉल से निकल कर हम सब ने पोखरा लेक साइड का भ्रमण किया। हवा तेज होने के कारण हम लोग नौकायन का आनंद नहीं ले सके। साथ ही साथ ताल विहारी मंदिर का दर्शन नहीं कर पाए जो कि ताल के दूसरी तरफ स्थित है। कुछ अन्य स्थल जैसे सारंग कोट, मुक्तिनाथ/अन्नपूर्णा सर्किटआदि का दर्शन नहीं कर पाए। फेवा लेक के किनारे डिज्नी लैंड का भी छात्राओं ने आनंद लिया। अगली सुबह जल्दी हम सब को मनोकामना देवी के दर्शन हेतु जल्दी सुबह निकलना था। 3 मई को होटल से निकलने में हम सब निर्धारित समय से 1 घंटा देर हो गए। मनोकाना देवी मंदिर का रास्ता पोखरा से 105 किलोमीटर दूर था। प्रात: 10 बजे के आस पास बस का टायर पंचर हो गया, जिसको बनाने में ड्राइवर को लगभग 1 घंटा और लग गया। इस 1 घंटे हमने आस पास के पहाड़ों का भ्रमण किया तथा वहाँ कि खेती और रहन सहन कि जानकारी ली। वहाँ पर हम सब ने बाँस के फूल देखे तथा कुछ अन्य दुर्लभ पौधों का संग्रह किया। कुछ दूर चलने बाद हम लोगों ने रस्ते के किनारे नदी में उतर कर कुछ देर आनंद लिया तथा वहाँ कि टोपोग्राफी को समझा। पहाड़ी रास्ता होने के कारण तथा रास्ते में रुकने के कारण हम लोग अपने निर्धरित समय से 3 घंटे देर से पंहुचे। भीड़ ज्यादा होने के कारण मनोकामना देवी के दर्शन में लगभग 3 घंटे और लगने का अनुमान था। अत: हम सब ने नीचे से ही मनो कामना देवी की पूजा कर वापस आने का फैसला किया अन्यथा बॉर्डर पर ही हम सब को रात्रि गुजारनी पड़ती। 3 मई को रात्रि 8:45 पर हम सब नेपाल-भारत बॉर्डर पर पहुंचे। वहाँ सामान की जाँच के उपरांत भारत के अंदर प्रवेश किये। भारत के अंदर आते ही अलग उत्साह और आनंद की अनुभूति हुई।

यहाँ आते ही सबके फोन में सिग्नल आ गए और लगभग सबके अभिभावकों के फोन आ गए। वहाँ से गोरखपुर पहुँचने में लगभग 3 घंटे और लगे। अगले दिन हम लोगों ने संग्रहीत पौधों को लैब में सुरक्षित किया। यह यात्रा शैक्षणिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से हम सब के लिये उत्तम रहा। हम सब ने इस यात्रा का भरपूर आनन्द लिया। यह यात्रा अपने उद्देश्य में सफल रही। अंत में मैं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० अनिल कुमार सिंह तथा प्रबंधक श्री मंकेश्वर नाथ पांडेय जी को धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने शैक्षणिक महत्त्व को समझते हुए इस यात्रा की अनुमति दी साथ ही साथ कुछ आर्थिक सहायता भी की।

❖❖❖❖❖

उल्टी यात्रा (पोते से बाबा तक)

2021 से 1970 के दशक अर्थात बचपन की तरफ जो 50 को पार कर गये हैं या करीब हैं उनके लिए यह उल्टी यात्रा खास है।

मेरा मानना है कि दुनिया में जितना बदलाव हमारी पीढ़ी ने देखा है हमारे बाद की किसी पीढ़ी को शायद ही इतने बदलाव देख पाना संभव हो।

हम वो आखिरी पीढ़ी हैं जिसने बैलगाड़ी से लेकर सुपर सोनिक जेट देखे हैं। बैरंग ख़त से लेकर लाइव चैटिंग तक देखा है और वर्चुअल मीटिंग जैसी असंभव लगने वाली बहुत सी बातों को सम्भव होते हुए देखा है।

हम वो पीढ़ी हैं —जिन्होंने कई-कई बार मिटटी के घरों में बैठ कर परियों और राजाओं की कहानियां सुनीं हैं। ज़मीन पर बैठकर खाना खाया है। प्लेट में डाल डाल कर सुड़ुप सुड़ुप चाय पी है।

हम वो लोग हैं—जिन्होंने बचपन में मोहल्ले के मैदानों में अपने दोस्तों के साथ पम्परागत खेल, गिल्ली-डंडा, छुपा-छिपी, खो-खो, कबड्डी, कंचे जैसे खेल खेलें हैं ।

हम आखरी पीढ़ी के वो लोग हैं—जिन्होंने चाँदनी रात में ढीबरी, लालटेन या बल्ब की पीली रोशनी में होमवर्क (गृह कार्य) किया है और दिन के उजाले में चादर के अंदर छिपा कर नावेल पढ़े हैं।

हम वही पीढ़ी के लोग हैं—जिन्होंने अपनों के लिए अपने जज़्बात खतों में आदान-प्रदान किये हैं और उन खतों के पहुँचने और जवाब के वापस आने में महीनों तक इंतजार किया है।

हम उसी आखरी पीढ़ी के लोग हैं—जिन्होंने कूलर, ए.सी या हीटर के बिना ही बचपन गुजारा है और बिजली के बिना भी गुजारा किया है।

हम वो आखरी लोग हैं —जो अक्सर अपने छोटे बालों में सरसों का ज्यादा तेल लगा कर स्कूल और शादियों में जाया करते थे।

हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं —जिन्होंने स्याही वाली दवात या पेन से कॉपी किताबें, कपड़े और हाथ काले-नीले किये हैं। तख्ती पर नरकट की कलम से लिखा है और तख्ती धो कर सलाखें है।

हम वो आखरी लोग हैं —जिन्होंने टीचर्स से मार खाई है और घर में शिकायत करने पर फिर मार खाई है।

हम वो आखरी लोग हैं —जो मोहल्ले के बुज़ुर्गों को दूर से देख कर नुक्कड़ से भाग कर घर आ जाया करते थे और समाज के बड़े बूढ़ों की इज्जत डरने की हद तक करते थे।

हम वो आखरी लोग हैं—जिन्होंने अपने स्कूल के सफेद केनवास शूज पर खड़िया का पेस्ट लगा कर चमकाया है!

हम वो आखरी लोग हैं—जिन्होंने गुड़ की चाय पी है। काफी समय तक सुबह काला या लाल दंत मंजन या सफेद टूथ पाउडर इस्तेमाल किया है और कभी कभी तो नमक से या लकड़ी के कोयले से दाँत साफ किए हैं।

हम निश्चित ही वो लोग हैं—जिन्होंने चाँदनी रातों में, रेडियो पर BBC की खबरें, विविध भारती, आल इंडिया रेडियो, बिनाका गीत माला और हवा महल जैसे प्रोग्राम पूरी शिद्दत से सुने हैं।

हम वो आखरी लोग हैं—जब हम सब शाम होते ही छत पर पानी का छिड़काव किया करते थे।

उसके बाद सफ़ेद चादरें बिछा कर सोते थे।

एक स्टैंड वाला पंखा सब को हवा के लिए हुआ

करता था।

सुबह सूरज निकलने के बाद भी ढीठ बने सोते रहते थे।

वो सब दौर बीत गया। चादरें अब नहीं बिछा करतीं।

डब्बों जैसे कमरों में कूलर, एसी के सामने रात होती है, दिन गुजरते हैं।

हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं —जिन्होने वो खूबसूरत रिश्ते और उनकी मिठास बाँटने वाले लोग देखे हैं, जो लगातार कम होते चले गए।

अब तो लोग जितना पढ़ लिख रहे हैं, उतना ही खुदगर्जी, बेमुरव्वती, अनिश्चितता, अकेलेपन, व निराशा में खोते जा रहे हैं।

और हम वो खुशनसीब लोग हैं —जिन्होंने रिश्तों की मिठास महसूस की है...!!

और हम इस दुनियाँ के वो लोग भी हैं जिन्होंने एक ऐसा अविश्वसनीय-सा लगने वाला नजारा देखा है।

आज के इस करोना काल में परिवारिक रिश्तेदारों (बहुत से पति-पत्नी, बाप-बेटा, भाई-बहन आदि) को एक दूसरे को छूने से डरते हुए भी देखा है।

पारिवारिक रिश्तेदारों की तो बात ही क्या करे खुद आदमी को अपने ही हाथ से अपनी ही नाक और मुंह को छूने से डरते हुए भी देखा है।

अर्थी को बिना चार कंधों के श्मशान घाट पर जाते हुए भी देखा है।

पार्थिव शरीर को दूर से ही अग्नि दाग लगाते हुए भी देखा है।

हम आज के भारत की एकमात्र वह पीढ़ी हैं जिसने अपने दादा-दादी, माँ-बाप की बात भी मानी और बच्चों की भी मान रहे है।

शादी में (buffet) खाने में वो आनंद नहीं जो पंगत में आता था जैसे....

सब्जी देने वाले को गाइड करना, हिला के दे या तरी देना!

उँगलियों के इशारे से 2 लड्डू और गुलाब जामुन, काजू कतली लेना

पूड़ी छाँट छाँट के और गरम गरम लेना!

पीछे वाली पंगत में झाँक के देखना क्या क्या आ गया, अपने इधर क्या बाकी है और जो बाकी है उसके लिए आवाज लगाना।

पास वाले रिश्तेदार के पत्तल में जबरदस्ती पूड़ी रखवाना!

रायते वाले को दूर से आता देखकर फटाफट रायते को पी जाना कि जल्दी फिर माँग लेना।

पहले वाली पंगत कितनी देर में उठेगी उसके हिसाब से बैठने की पोजीशन बनाना।

और आखिर में पानी वाले को खोजना।

ये सब आज के हमारे अपने ही बच्चों के लिए एक अच्छी सी कहानी जैसी लगती होगी। सभी बच्चे हॉस्पिटल मे पैदा होते हैं और घर मे टी वी और मोबाइल के अभिभावकपन के साथ पूरी ज़िंदगी बिता रहे हैं। क्या फिर वो दिन वापस आ सकता है जो अपनेपन के एहसास को हमारे बच्चों मे उत्पन्न कर सके।

डॉ० मनोज कुमार श्रीवास्तव,
रसायन विभाग

❖❖❖❖❖

औरत—एक परिचय

कहते हैं औरत अबला है, कमजोर है।
अरे! औरत ने ही जना है इस मर्द को भी,
जिसकी बाजुओं में जोर है।
अखण्ड शक्ति की परिचायक,
अपार ममता की सागर है।
नफरत-से भरी दुनिया में भी,
प्रेम की छलकती गागर है।
औरत तब भी आगे थी,
जब अंग्रेजों का जमाना था।
औरत आज भी आगे है,
जब कम्प्यूटर का दौर है।
कहते हैं, औरत अबला है, कमजोर है।
अरे! औरत ने ही जना है उस मर्द को भी
जिसकी बाजुओं में जोर है।

अर्चना यादव
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष
(गणित)

चिंता ने चिता से मुस्कुराते हुए कहा

चिंता ने चिता से मुस्कुराते हुए कहा, तू अंतिम सत्य है मैं प्रथम सत्य हूँ, तू मुरदों को जलाती है मैं जिंदों को जलाती हूँ!

तेरी आग महसूस नहीं होती मेरी तपन से हर इंसान झुलस जाता है। तू हार से विदा कर देती है मैं कस के जकड़ लेती हूँ।

तू मृत्यु से जुड़ी है मैं जिंदगी से जुड़ी हूँ तू एक ही बार जलाती है मैं हर रोज जलाती हूँ।

सीख—परिस्थिति में दोस्तों आज हर वर्ग हर उम्र के लोग इस डिप्रेशन या चिंता से पीड़ित हैं। आपको समझना होगा कि ये आपको मृत्यु के द्वार तक ले जाती है। इसलिये आज ही इसका त्याग करें क्योंकि चिंता करने से आपकी परेशानी कम नहीं होगी। इसलिये मुस्कुराना सीखें।

किया सैनी
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)

सुविचार

- अपने भीतर के प्रकाश को लगाओगे, तभी उस संसार को प्रकाशित बना पाओगे।
- प्रेम अपने कार्य और ईश्वर से करो, क्यों कि ये कभी धोखा नहीं देते।
- व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ शिक्षक समय और जिन्दगी है। समय जिन्दगी की कीमत बताता है, जिन्दगी समय का सदुपयोग सिखलाती है।
- तेज हवाओं में उड़ते हैं जो परिन्दे, उन परिन्दों कै 'पर' नहीं हौसले मजबूत होते हैं।
- कठिनाइयाँ जब आती हैं, तो कष्ट देती हैं, पर जब जाती हैं तो 'आत्मबल' का ऐसा उत्तम उपहार दे जाते हैं, जो उन 'कष्टों' की तुलना में 'हजारों' गुना 'मूल्यवान' होता है।
- जीवन का आखिरी समय कैसे व्यतीत होगा इसका फैसला हमारा धन नहीं, बल्कि हमारे द्वारा किये गये व्यवहार और दिये गये संस्कार तय करेंगे। हर कर्म बहुत ध्यान से करें क्यों कि न किसी की दुवा खाली जाती है और न ही किसी की बद्दुआ।

प्रमील कुमार मिश्र
प्रयोगशाला सहायक
(वनस्पति विज्ञान विभाग)

आर्थिक व्यवस्था की मूलाधार—भारतीय कृषि

भारत कृषि प्रधान देश है। प्रकृति ने भारत वर्ष को अमूल्य वरदान दिया है। ऐसा भूमि क्षेत्र किसी भी अन्य देश को प्राप्त नहीं है। हजार वर्ष पहले भारत के गाँव पूर्ण इकाई के रूप में कार्य करते थे। जहाँ जीवन निर्वाह की समस्त वस्तुएँ गाँव के खेतों में पैदा होती थीं। गांव का सम्पूर्ण समाज कृषि पर निर्भर था। फिर बाजार और आवागमन के साधन विकसित हुए और विज्ञान का पहिया तीव्र गति से चलने लगा। जिसका परिणाम हुआ कि कृषि पर आधारित अनेक उद्योग-धन्धों का विकास हुआ। भारतीय कृषि ने जहाँ जीवन निर्वाह के लिए खाद्यान्न उगाये वहीं जूट और कपास ने उद्योग की स्थापना की।

पहले कृषि से छोटे-छोटे उद्योग स्थापित हुए। मशीनीकरण के कारण इनमें प्रगति हुई और यह छोटे उद्योग गाँव से निकल कर शहरों में स्थापित हुए। आटा मिल, राइस मिल, दाल मिल, तेल मिल के साथ ही कृषि पर आधारित जूट मिल, कपड़ा मिल और दुग्ध डेयरियों का विकास हुआ है। रेल और सड़कों का जाल बिछा है, कृषि उत्पाद सम्बन्धित कल कारखानों एवं इनसे सम्बन्धित बाजारों के विकसित होने से गाँव से लेकर शहरों तक के लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ। भारत केवल धान, गेहूँ, दलहन, तिलहन ही नहीं उगाता यह सब्जी और मसालों के उत्पादन में भी अग्रणी है।

भारत मसानों का निर्यात भी करता है। व्यापारिक फसलों ने भारतीय अर्थव्यवस्था के काफी सुदृढ़ किया है। हम यह भी बताना चाहते हैं कि आज कृषि का जी०डी०पी० में 20% का योगदान है। आज भी भारत के 48.9% लोगों का जीवन कृषि पर निर्भर है। भारत की धरती ईश्वर का भारतीयों के लिए वरदान है।

सम्पूर्ण भारत की धरती का अवलोकन करें तो हम पायेंगे कि प्रकृति ने कहीं फलों के लिए कहीं व्यापारिक फसलों के लिए भूमि प्रदान की है। अत: इन फसलों का भारत में ही नहीं विश्व में धूम है।

यह कहना समीचीन है कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। भारतीय कृषि ने रोजगार के क्षेत्र में अनेक अवसर प्रदान किया है। खेतों से लेकर बाजार तक बाजार से लेकर उद्योग-धन्धों तक रोजगार की शृंखला खड़ी की है। कृषि के कारण ही दुग्ध उत्पादन को बल मिला है। आज देश में दुग्ध के साथ ही उससे बनने वाले अनेक पदार्थों के अनेक बड़े डेयरी के संस्थान चल रहे हैं जिसमें असंख्य लोग काम कर रहे हैं। मैं आंकड़ों में नहीं जाना चाहता। 'सब कहता कागज की लेखी, मैं कहता अखिन की देखी' आज के भारत को कृषि ने ही खड़ा किया है। हमें किसानों के श्रम को नहीं भूलना चाहिए। यह स्थिति उनके श्रम के स्वेद के एक-एक बूँद से निर्मित हुई है। राष्ट्रकवि की वाणी मुखर हो उठती है।

बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा-सा जल रहा।
है चल रहा सन पवन, तन से पसीना ढल रहा।
देखो, कृषक शोणित सुखाकर हल तथापि चला रहे।
किस लोभ से इस आँच में वे निज शरीर जला रहे।

आज के भारत को कृषि ने खड़ा किया है। देश की समृद्धि खेतों एवं खेती से है। कृषि ही भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार है।

प्रिन्स पाण्डेय
(B.Com 2nd Year)

❖❖❖❖❖

कोरोना से बचाव

कोरोना हो रहा हर देश हर शहर
दुनिया के हर देश में बरपा रहा अपना कहर
सुन मेरी बात कोरोना से न डर
छोटी-छोटी बातें और छोटे से उपाय कर
कोरोना से बचना है तो
पब्लिक प्लेस से बच और रह अपने घर
मजबूरी है जिसकी जाने की
बात है पापी पेट और खाने की
तो कोई बात नहीं
किसी बात का डर नहीं
घर से निकल तू मास्क लगा कर
लोगों से बात करना
एक मीटर की दूरी बनाकर
सुन मेरी बात कोरोना से ना डर
छोटी छोटी बातें और छोटे से उपाय कर
कोरोना से बचना है तो
पब्लिक प्लेस से बच और रह अपने घर
ना बात मिला ना हाथ मिला
ना मुँह लगा ना गले लगा
एडवाइज है सबको पहन हाथ में ग्लब्स
और मुँह पे अपने मास्क लगा
भीड़-भाड़ से दूर रहकर
खुद को बचा और दूसरों को भी बचा
गन्दगी से बच, सफाई कर
बीस सेकेण्ड तक हाथ धो
और खुद को सेनेटाइज कर
बस इतनी सी सावधानी
फिर किस बात का है डर
सुन मेरी बात कोरोना से न डर
छोटी छोटी बातें और छोटे से उपाय कर
कोरोना से बचना है तो
पब्लिक प्लेस से बच और रह अपने घर

अंकित शुक्ला
(B.S-C. 3rd Year)

लकीरें भी बड़ी अजीब होती है

माथे पर खींच जाए तो,
किस्मत बना देती है
जमी पर खींच जाए तो
सरहदें बना देती हैं
खाल पर खींच जाए तो
खून निकाल देती हैं
और
रिश्तों पर खीच जाए तो
दीवार बना देती हैं।

शिक्षक

कभी डाँट कर हमें प्यार जताया
कभी रोक-टोक कर चलना सिखाया,
कभी कलम से लिखना सिखाया,
उज्जवल भविष्य का सूरज उगाया।
ढाल बनकर के हर मुश्किल से बचाया॥
कभी हक के लिये लड़ना सिखाया,
कभी गलती बताकर कभी गलती छुपाकर,
एक सच्चे गुरु का फर्ज निभाया,
कभी माता-पिता बन दी सलाह,
कभी दोस्त बन हौसला बढ़ाया॥
आज कहते हैं उन टीचर्स को बड़ा-सा थैंक यू,
जिन्होंने हमें इस काबिल बनाया।

अंकित शुक्ला
(B.Com 3rd Year)

सारा जग रोशन हो जायेगा

बहुत हुआ तम का शासन
अब अंधकार मिट जायेगा।
एक दीप जला जो जीवन में,
सारा जग रोशन हो जायगा।
नयनों से अमृत वर्षा होगी,
सब हृदय पाप घुल जायेगा
जब कोमल अधर मुस्कुरायेगा।
एक दीप जला जो जीवन में,
सारा जग रोशन हो जायगा।
वह लौट रहा तम घर अपने,
अब लौट कभी का आयेगा।
सबके मन में जो दीप जला तो
सारा जग मुस्कुरायेगा।
ये क्षणिक अंधेरा भी डरकर
वापस कभी ना आयेगा।
एक दीप जला जो जीवन में,
सारा जग रोशन हो जायगा।

❖❖❖❖❖

झुको

केवल उतना ही
जितना जरूरी हो, बेवजह
झुकना दूसरों के अहम् को
बढ़ावा देता है।

❖❖❖❖❖

करती रह खुद में बस निखार

रे मन इतनी तू, क्यूँ उदास
बढ़ती चल अपने तन के साथ
करते हुए कभी खुद से भी बात
क्या बची नहीं तुझमें यूँ आस?
हर डगर-डगर करके श्रृंगार
खुद में करते हुए तू सुधार
करती रह खुद में बस निखार
रे बावली सी क्यूँ तू फिरे
तुझ में कोई न क्यूँ दीप जले
कभी पायल की झंकार लिए
कभी फूलों का तू हार लिए
कभी शहद सी मीठी स्वाद लिए
कभी कड़वाहट भी साथ लिए
खुद में करते हुए तू सुधार
करती रह खुद में बस निखार
रे प्रिय सखी, तू चंचल खग
कभी डाली तो कभी नील गगन
कभी ऊँचे पर्वत के शिखर
कभी सुंदर भूमि की गरज
तू कब स्थिर हे भ्रमणशील
कब रहती तुझको एक पल की धीर
बस चाहे भरले जितनी उड़ान
करना एक पल खुद में, भी ध्यान
तुम से मिलकर एक जीवन बनता
तुझ बिन जाया जीवन का सार
खुद में करते हुए तू सुधार
करती रह खुद में बस निखार

प्रतिमा-मिश्रा
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)
जीव विज्ञान वर्ग

भारत की राजनीति और राजनीतिक विकास

भारतीय राजनीति एक ऐसी राजनीति है जिसकी चर्चा पूरे विश्व में होती है। भारत की राजनीति में अब एक नया बदलाव देखने को आ रहा है। जिसमें हमारे युवा भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे और साथ ही में महिलाओं का भी राजनीति में आने का प्रतिशत बढ़ रहा है।

इतिहास से पता चलता है कि राजनीति में महिलाओं की भूमिका रही है, रजिया सुल्तान से लेकर इन्दिरा गाँधी तक राजनीति में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई, आज देश के पास महिला मुख्यमंत्री भी है और महिला राज्य पाल भी हैं, इसी तरह केन्द्र सरकार में भी महिलाएं बड़े-बड़े पदों पर आसीन होकर भारत की राजनीति को एक नई दिशा में लेकर जा रही हैं जिससे भारत एक दिन विश्व गुरु कहलायेगा। भारत पहले भी विश्व गुरु है क्यों कि यहाँ पर प्राचीन काल से ही हमेशा नई खोजें हुआ करती थीं। आपको पता होगा कि शून्य का खोज भी भारत में हुआ था।

भारत में जो राजनीतिक बदलाव आ रहे हैं, इससे भारत एक आत्मनिर्भर देश बनेगा, भारत प्राचीन काल से ही संसाधनों से परिपूर्ण देश रहा है, यहाँ पर हर प्रकार की चीजों को बनाने और उसका अपने जीवन में उपयोग कर अपने राष्ट्र निर्माण में मदद कर सकता है, जब कोरोना महामारी के कारण किसी भी देश से सामानों का अदान-प्रदान बंद था तो लॉकडाउन के दौरान हमारे प्रधानमंत्री जी ने देश को आत्मनिर्भर बनाने का तरीका प्रस्तुत किया उन्होंने 'वोकल फॉर लोकल' का नारा दिया था जिसका अर्थ लोकल में बनी वस्तुओं का उपयोग और प्रचार करना और देश तभी आत्मनिर्भर बनेगा जब देश की राजनीतिक व्यवस्था अच्छी होगी और देश की राजनीतिक व्यवस्था तभी अच्छी होगी जब हमारे देश के सभी युवा राजनीति को नई दिशा की ओर ले जायेंगे। ये बात सही कही गई है। कि—

''जिस ओर जवानी (युवा) चलती है।
उस ओर जमाना चलता है॥''

श्रेयांशी सिंह
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)

❖❖❖❖❖

फेल भाई

स्टार बना दो भाई को,
भाई तो अपना हीरो है।
कुछ और न आता हो इसको,
यह सबको सिखाता जीरो है।
आर्या का चेला कहलाता,
नम्बर में जीरो ले आता।
हर बार टाप के फेल लिस्ट में,
इसका नाम जरूर आता।

इसका गुणगान सभी गाते,
कालेज में इसके फैंस बड़े।
इसलिये बार-बार ये,
छात्र नेता का चुनाव लड़े।
दो-चार शब्द न घुस पाते,
इसके दिमाग की कुटिया में।
जूएँ भी खूब हैं इतराते,
इसकी छोटी-सी चुटिया में।

द्वीप नारायण
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)

❖❖❖❖❖

माँ-पापा पर कुछ पंक्तियाँ

- जब एक रोटी के चार टुकड़े हो और खाने वाले पाँच। तब 'मुझे भूख नहीं है' ऐसा कहने वाली सिर्फ माँ होती है।
- दम तोड़ देती है माँ-बाप की ममता जब बच्चे कहते हैं कि तुमने किया ही क्या है' हमारे लिये।
- किसी ने माँ के कंधे पर सर रख कर पूछा, 'माँ कब तक अपने कंधे पर सोने दोगी? माँ ने कहा जब तक लोग मुझे अपने कंधे पर न उठा लें।
- मत गुस्सा करना अपनी माँ पे यारों माँ की दुआ ही है जो तुम्हें हर मुसीबत से बचाती है।
- न जाने कितने दुख कमाते हैं एक पिता औलाद की खुशी खरीदने के लिये। फिर भी उसी औलाद के महल से एक कोना नहीं मिलता माँ-बाप को रहने के लिये।
- मेरी माँ आज भी अनपढ़ ही है रोटी एक माँगते हैं तो दो देती है।
- आज रोटी के पीछे भागती हूँ..... तो याद आता है मुझे रोटी खिलाने के लिये माँ मेरी पीछे भागती थी।
- घर में चाहे कितने ही लोग क्यों न हो..... मगर घर में माँ न दिखे तो घर खाली-खाली ही लगता है।
- माँ-बाप की दवाई की पर्ची अक्सर गुम हो जाती है.... पर लोग वसीयत के कागज बहुत अच्छी तरह सम्भाल कर रखते हैं।
- एक पिता हमेशा नीम की पेड़ जैसा होता है....। जिसके पत्ते भले ही सड़ते हो पर छाया हमेशा ठंडी देता है....।

पिता द्वारा कहे गये भावुक शब्द:—
'बोझ ईंटों का और बढ़ा दो साहब'
मेरे बच्चे ने आज एक और खिलौने की फरमाईश की है.....।

प्रियांशी कसौधन
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

❖❖❖❖❖

मुस्कान

ऐ फूल जरा मुस्कुराओ, फिर तो मुरझाना है।
यह जीवन हमें मिला है, कुछ करके जाना है।
यह भीड़ बड़ी है भारी, दुनिया एक मेला है
दुनिया के इस मेले में मेरा मन भी अकेला है।
तुम काँटो में भी रहकर, मुस्कराते रहते हो
शिक्षक बन तुम इस जग को, सिखलाते रहते हो
संघर्ष है यह जीवन, हंस करके बिताना है
ऐ फूल जरा मुस्कराओ, फिर तो मुरझाना है।
जीना तुमसे सीखे कोई, मरना तुमसे सीखे
बन करके हार गले का, अर्पित होना सीखे
गरिमामयी प्रतिमा बनकर, स्मृति बन जाना है।
ऐ फूल जरा मुस्कुराओ, फिर तो मुरझाना है।
तुम हो कितने अच्छे, तुम हो कितने प्यारे
तुममें कितने छिपे हैं गुण, सबको बतलाना है।
भाग्य प्रबल कितना अपना, यह भी अजमाना है।
सम्मान मिले इस शिक्षक को, अज्ञान मिटाना है
जो दिखा सके राहें सबको, वह दीप यहाँ जलाना है।
ऐ फूल जरा मुस्कुराओ, फिर तो मुरझाना है।
यह जीवन हमें मिला है, कुछ करके जाना है।

कुमारी गुंजन सिंह
एम.एस-सी. (गणित) चतुर्थ सेमेस्टर

❖❖❖❖❖

Chemistry facts

1. Gallium is a metal which melts on palm of the hand, melting point (29-76^{0}C).
2. Oxygen gas is colourless, but the liquid and solid forms of oxygen are blue.
3. The only two non-silvery metals are gold and copper.
4. The lighter was invented before the match (in 1826) by J.W Dobereiner
5. Chalk is made of trillions of microscopic fossils of plankton
6. An atom is about 99.999999999% empty space. If you remove the empty space from the atoms of all people, the entire human race could fit in the volume of a sugar tube.
7. A liter of sea water contaius 35 gram of salt, more than half of which is sodium chloride. The rest is mainly calcium and magnesium chloride and sulfates , which give sea water a bitter taste.
8. Copper and Boron make flames turn Green, If you add compounds of boron to alcohol, it will burn with a green flame.
9. Natural gas has no colour or smell; What does gas in apartments smell of, then? To detect leaks, 'aromatizers' are added to natural gas-odorants, organic substances contining sulfur, which have a harsh, unpleasant smell of rotten cabbage moldy hay, rotten eggs.
10. Rust can be remoed from metal objects with Coca-Cola. The drink contains phosphoric Acid (H_3PO_4). It softens rust, making it easier to wipe off. The compound is added to the drink as an acidity regulator.

Divya Singh
M.S-C. II Sem (Chemistry)

❖❖❖❖❖

'MOTIVATIONAL POEM'

क्या खोजते हो दुनिया में,
जब सब कुछ तेरे अन्दर है।
क्यों देखते हो औरों में,
जब तेरा मन ही दर्पण है।
दुनिया बस एक दौड़ नहीं,
तू भी अश्व न ही है धावक।
रुक कर खुद से बातें कर ले,
अन्दर मन को शान्त तो कर ले।

सपनों की गहराई समझो,
अपने अन्दर की अच्छाई समझो।
स्वाध्याय की आदत डालो,
जीवन को तुम खुलकर जी लो।
आलस्य तुम्हारा दुश्मन है तो,
पुरुषार्थ को अपना दोस्त बना लो।
जीवन का ये रहस्य समझ लो,
और खुशियों से तुम नाता जोड़ो।

❖❖❖❖❖

World War III

Is the war going to started?

War, nowadays is becombing the biggest hot topic for global leaders likewise the current situation between Russia and Ukraine going at war is created situation for world war III. Global leaders are still to decide, on whose side they are?

This all started in 2014, when Russia invaded Ukrainian territory Crimea, which a natural gas economical source. Crimea from then onward is been sized by Russians they are not backing off here NATO (North Atlantic Treaty Organisation) promised Ukraine to help. So the glimpse of war were already started.

Now Luhansk and Donetsk is another place attacked by Russia (also an gas source). In 1991, some how when Ukraine was third largest nuclear weaponized country, Russians managed to destroy their nuclears weapons. And at present Ukraine is defencelers as NATO countries pulled out themselves from war. Ukraine is being marsawed, butchered today, asking to global leaders to help. So in this situation if anyone, any country goes to help them is same as declare war with Russia. This is creating situation of division of world in two part.

This can lead to world war III. So as soon as we have time global leaders and countries should trip to stop war through meetings or if we failed and war is started. These unclear will demolish earth's, beauty so every conflict needs' to stop immediately.

Komal Rauniyar
B.S-C. (II Year)

❖❖❖❖❖

ये बात समझ में आई नहीं

ये बात समझ में आई नहीं
और मम्मी ने समझाई नहीं।
मैं कैसे मीठी बात करूँ?
जब मीठी चीजें खाई नहीं।
अगर बिल्ली शेर की मौसी है,
फिर हमने उसे क्यों पाला है
क्या शेर बहुत नालायक है?
या मौसी को मार निकाला है॥
क्यों लम्बे बाल है भालू के?
क्यों उसने बाल कटाया नहीं?
क्यो वह भी गंदा बच्चा है,
या जंगल में कोई नाई नहीं?
क्यों तारे जगमग करते हैं?
क्या उनकी चाची-ताई नहीं।
पर चंदा किसका मामा है,
जब मम्मी का वह भाई नहीं।
ये बात समझ में आई नहीं
और मम्मी ने समझाई नहीं।

❖❖❖❖❖

Paragraph on Nature

Nature is made of everything we see around us-trees, flowers, plants animals, sky, mountains, forests and more. Human beings depend on nature to stay alive. Nature helps us breathe, gives us food, water shelter, medicines, and clothes. We find many colors in nature which make the Earth beautiful.

Nature includes living and non- living components that together make life on Earth possible.

Nature is the endless expanse of life forms, beauty, resources peace and nourishment. Every bud that grows to a flower, every cater pillar that flies with the wings of a butterfly and every infant who faces the world as a human, owes its survival and sustenance to nature. In addition is providing resources for our daily needs of food, clothing and shelter. Nature also contributes to different industries and manufacturing units.

Great lengths of mountains, thriving ecosystems, the ever-spreding sky together with the lithosphere, hydrosphere and atmosphere create a saga called 'nature' .

Rich both in terms of its scenic beauty and replenishing resources, nature accounts for supporting life in different shapes and forms on our planet.

❖❖❖❖❖

- Students need to know that struggling with the language in informational texts is not due to their innate weaknesses or lack of ability.
- The language challenging for everyone".
- As with all classroom tools, a teblet must be considered in terms of its end user-teacher individual student, or a small group of students and the learning purpose it will serve.
- Would you like to be remembered as the teacher who Challenged students and asked them authentic adult-level Though-provoking real-world questions? Or do you want to be the teacher who gives students daily worksheets that cut into their afternoon the choice is yours, but choice will be the difference b/w being remembererd a not being immortalized.
- Every student has a "safety card" (for older students also called a Chill Out" card). The card asks students to identify (In either words or a drawing). Three activities they can do for a couple of minutes when they are unable to focus: lie put head down and close eyes; abeatle in a special dolling book; take a walk to the water cooler
- In my arrogant opinion so ahead, keep on growing, but remember those few pages of the post, you are the clemon who, clares to choose the heights?

❖❖❖❖❖

Failure Is Contagious

Many people risk me why I don't use forums or hate forums There is a reason for this, when was the lost time you've seen a millionaire, enjoying a successful life spending hears at a time in a forum?

Exactly this something you do not see because people with incredibly rewarding lives, live these lives and don't pass them away in forums. Forums tend to attract lost confused souls who look for confirmation" of their through other lost souls. I want to make something clear. "failure" is a state of mind of always being hopeless and blaming others. I am not referring to "feedback which is learning for making a mistake.

Forums tend to encourage the behaviour of failure. But there is some thing even more insidious going on. People have a need to "fit in" and be part of a "tribe". Forums are mostly filled with people who are least and have no direction. The best way for People to fit in is to imitate those around them. Do you follow what i'm saying? Even if you previously had no problems before if you spend a long enough time in a forum full of last people you yourself will being lost The subconscious mind will be mine its te best way for you to fit in.

This is why I encourage people to stay away form forums or people who want to infect you with thier negativity. If you want once. If simple, find someone who has done what you want to do and learn from them. Many of you already know that which is why you are using my products to change your lives, because I already know how to do what you want to do.

If you are learning a new skill, or joining a new program, the very last thing you want to do is join a forum" support group to help you. Many positive benefits will, be deleted by the hundreds of negative and lost souls who merely want confirmation as te Why their lives sucks. This is why I encourage people who are learning new skills to stay away from forums". Find a mentor not a forum

❖❖❖❖❖

INTO THE COSMOS

I wish to you in the black hole.
Where we could wear a same soul;
Where we will travell from event horizon to singularity.
Where it is dark; I' m scared;
I'll have your chest by gravity.
We will keep shoering our heart down,
where the conceplions of time and space completely break down.
Where we will fall in love with different dimensions;
Only You are mine and I'll be your's where there is no limitation

—Ravikant

❖❖❖❖❖

फिर बचपन की छाँव में

चलो चले मन लौट चलें,
फिर बचपन की छाँव में
जहाँ कभी हम तुम थे मिले
अपनों के उस गाँव में।

सुनें कहानी परियों की
सोते-सोते रात में,
तारों से कुछ बातें कर लें
चरखा देखें चाँद में।

छप-छप पानी में कर लें
भीगें हम बरसात में,
चींटा-चींटी सैर कराएँ
फिर कागज की नाव में।

भागें तितली के पीछे
आए ना पर हाथ में,
मीठा-मीठा दर्द बुला लें
नन्हें-नन्हें पाँव में।

आओ हम तुम मिल खेलें
अच्छे खेल खिलौनों के,
चलो मचल कर रो लें फिर से
हार जीत के दाँव में।

साँझ ढले हों नींद तले
हों परियों के गाँव में,
निंदिया से जब मैं जागूँ तो
हूँ ममता की छाँव में।

चलो चलें मन लौट चलें
फिर बचपन की छाँव में,
जहाँ कभी हम तुम थे मिले
अपनों के उस गाँव में।

डॉ० सी० पी० सिंह
एसोसिएट प्रो० (रसायन विज्ञान)

❖❖❖❖❖

प्यारी गिलहरी

हे छोटी-छोटी प्यारी गिलहरी
फुदक-फुदक क्यों खाती हो?
अपने अनोखे करतबों से
चाहती क्या प्रदर्शित करना?

आँखों को ऐसे मटकाकर
करती क्यों मुझको आकर्षित
देख तुम्हें मैं खींची आती जैसे
तुम यौवना मदमाती॥

देख तुम्हें मन आकर्षित होता
पुलकित होता गाता है,
ऐसा लगता जैसे की
सदियों का हमारा नाता है

हे नन्हीं मुन्नी प्यारी गिलहरी
फुदक फुदक क्या खाती हो?
जब मैं जाती पास तुम्हारे
क्यों कूदकर भाग जाती हो।

कहाँ से नित्य तुम आती हो?
कहाँ चली फिर जाती हो?
क्या तुम रहती कुंज सदन में
या फिर रहती किसी भवन में

जब मैं देखूँ बाल सखा संग
तुम्हें खेलते आँख मिचौली
क्यों चाहे मन मैं भी खेलूँ
संग तुम्हारे आँख मिचौली?

रजनी श्रीवास्तव
एम.एस-सी. (Math) चतुर्थ सेमेस्टर

❖❖❖❖❖

STORY OF SUCCESS

Once Upon a time there was a monk who lives in a small village. He was very famous in his village and all the nearby villages because wherever there were a drought, villagers used to come to him and request him to dance and whenever he used to dance it would rain. So, whenever the people of the village needed rain. They would Î to the monk and rain would surely happen. One day few friends from the far away visited the village when they came to know that there. is a monk who can make rain happen with his dance. They did not believe it. Since they were from a big urban city and studied in very modern institutions, there fore they couldn't believe it. So, they thought that it would be a good idea to meet that monk and see if he really can make rain happen or it is just a rumour. All of the friends reached the monk's house and greeted him. They asked the monk: will it rain today or not? The monk smiled and said well definitely it will rain today. One friend asked how can it rain today because there are no clouds in the sky today and it's totally clear. Monk replied if you dance with faith rain will definitely come. All the friends laughed at the monk and said how can we make rain happen with our dance? We think that it can not rain due to the dance of someone, but they wanted to check it. Therefore they agreed to test the monk. So the boys decided to dance first, one by one. The first friend danced for half an hour but it did not rain. After that second friend danced for one hour but again it did not rain. After that the third, the fourth and the fifth danced one by one but there was no rain. Not even any sign of cloud was there. How it was monks turn to dance and he started dancing. One hour passed while dancing, then two then three and then four hours passed but monk was not stopping. He dancing passionately. There was a different kind of passion on his face and he was dancing with the full of joy. The boys were looking at the monk in ostonishment. They were looking up at the sky again and again, but there was no sign of rain and the monk was dancing tirelessly. From morning to evening time approached suddenly clouds began to form in the sky. Thunder of clouds started to heard in the sky and soon it started raining heavily and the monk' was still dancing and getting drenched in the rain. Aff All of the friends were amazed to see this and they had tears of joy in their eyes. They bow down in front of the monk and apologized to him. Then they asked him: sir, please tell us that why it rained when you danced and why it did not rain when we danced? What was the difference between our dance and your dance? The monk smiled and said: My friend which I dance, 9 keep two things in my mind. The first thing is that I always believe that if I will dance rain will have to come and second is that I always. decide that I will dance until it rains. After listening there words from the monk the students understood that to be successful you have to keep trying until you get result. We see in our lives, we will find that to be successful in any field you need two things, one is believe in yourself and another is determination are these two qualities are present in all those people who achieve success in their lives. Successful people are always confident of the things they do and they determined to keep trying until they become successful. So if you want to achieve success in your life then" you need to have self-belief and determination like that monk and keep trying hard until you get success.

Priyanshu Panday
B.Sc Ist Year (Bio)

❖❖❖❖❖

कौन किसके साथ है?

इस अत्याचारी दुनिया में, कौन-किसके साथ है?
यहाँ तो बेटा ही भूल जाता है, कि कौन-किसका बाप है।
पढ़ाया-लिखाया और हर एक मुकाम तक पहुँचाया
पर आज उसी बेटे ने उसी बाप को धूप में खेत के काम तक पहुँचाया।
बचपन में ही उस पिता ने ही पंखा डुलाया था, रात-भर यूँ खड़े होकर.....
तो इतने खुदगर्ज क्यों हो जाते वही बेटे आज यूँ बड़े होकर।
संभाला था तब उस पिता ने ही,
जब डर गया था देख, एक छोटे..... से साँप को,
तो क्या आज यही उम्मीद रह गई थी..... उस बेटे से इस बाप को?
बिन पढ़ी-लिखी माँ खाना लेकर ऑफिस गई,
तो रेपोटेशन को लेकर बेटा खूब..... परेशान होता है।
पर अगर.....
वही बेटा कितना खुदगर्ज क्यों न हो, उस माँ को
अपने बेटे पर शान होता है।
रखकर गुमान पढ़ाने-लिखाने का, पिता ने बचपन में लाया था किताब।
पर वाह रे 'कलयुग'
आज वही बेटा, उसी बाप से, माँगने लगा हिसाब।
बचपन में रहती थी उत्साह, खिलौने लेने से पहले तब,
और कोई कद्र ही नहीं रह गई थी माँ-बाप सामने थे जब।
आज वह उत्साह भी नहीं रह गई, खिलौने आ-जाने के बाद,
और माँ-बाप के गुजरने पर, आती है उनकी याद
क्यों कि..... इस दुनिया में
''चीजों की कीमत उनके आने से पहले होती है,
और इंसानों की... उनको खो-देने के बाद''।
आज अगर एक बेटा ही भूल जाता है,
कि कौन-किसका बाप है?
तो फिर कोई सवाल ही नहीं उठता, कि कौन-किसके साथ है।
तो सब सब बातों की एक बात है, अगर कोई साथ है
तो सिर्फ वो 'माँ-बाप' है, सिर्फ वो 'माँ-बाप' है!

शिवानी चौरसिया
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

❖❖❖❖❖

बढ़ती बेरोजगारी

सम्पूर्ण भारत बेरोजगारी कि समस्या से जूझ रहा है—मैं मानता हूँ कि हमें मेहनत करना चाहिए मगर एक मजदूर जो खेतों में काम करता है क्या वे मेहनत नहीं करते? वो क्यों नहीं कुछ बन जाते हैं। मेहनत करने से पहले आप ये देखें कि आप मेहनत कहाँ कर रहे हैं। मेहनत जब करना है हर चीजों में तो हम मजदूरी करना ही क्यों चुनें। कुछ ऐसा चुने जिसे हम पाने के लिए कुछ कर सकते हैं। अगर मैं आप सभी से पूछें कि कौन-कौन चाहता मजदूर बनना तो शायद ही किसी का जवाब होगा—(मैं)।

लेकिन वहीं आपसे 4 घण्टे पढ़ने को कहा जाए तो वो भी नहीं होगा तो आप क्या करेंगे।

बेरोजगारी की समस्या का समाधान सिर्फ एक ही है और वो है ''शिक्षा''

हमारे समाज में ऐसे भी लोग है जो जन्म से ही अमीर है यानी उनका जन्म ही अमीर घर में हुआ है, जिस चीज का हम सभी स्वप्न, (ख्वाब) देख रहे हैं, वो चीजें उन लोगों के पास पहले से ही उपलब्ध हैं तो अपनी तुलना उन से बिल्कुल भी न करें और ''Lewis Corral'' ने कहा था, ''कुछ भी समझो केवल रोओ मत'' इनके ये बात हमेशा याद रखें।

जब आप किसी की काम को करना शुरू करे तो उसे खत्म करने के बाद ही मानें। काम ऐसा नहीं होना चाहिए जो आपको आराम दे, काम तो ऐसा होना चाहिए जो आपको तोड़कर रख दे।

प्रिन्स पाण्डेय

बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

❖❖❖❖❖

गजल

जालिमों के आशियाने में कभी जाता नहीं।
सर लुटेरों की खुशामद में झुका पाता नहीं॥
खनखनाती दौलतें भी हैं मेरे किस काम की।
जो निवाला हो न हक का मैं पचा पाता नहीं॥
बेबसी पूछो न यारों उस बिचारे बाप की।
दो निवाला घर की खातिर जो कमा पाता नहीं॥
जो दलाली खोर आला चोर बेईमान है।
मुँछ पर दे ताव वो नजरें मिला पाता नहीं॥
हूँ बड़ा बेटा मैं घर का फिर भी अपने बाप से।
है मुझे कितनी मोहब्बत मैं बता पाता नहीं॥
अब नहीं देगा किसी को तोड़ने ये दिल तेरा।
'देव' ये वादा खुदी से क्यूं निभा पाता नहीं॥

सत्यम पाण्डेय 'देव'

एम.एस-सी. (Math) चतुर्थ सेमेस्टर

❖❖❖❖❖

वर्षा

बारिश की बूँदें गिरी जब मेरे वृक्ष की शाखाओं पर वह नन्हा-सा छोटा पौधा पा स्पर्श बूँदों का झूम उठा खुशी से वो प्रसन्नता का कर आभास अभी तक तो तपता था वो लिये प्यास की ऐसी आस पा स्पर्श बूँदों का सोचा भीगूँ हर दिन मैं रात॥

उधर धरा भी तड़प रही ती सोच आर्द्र की बरसात या स्पर्श बूँदों का फैलाई खुशबू की आग बूँद-बूँद से भरा घड़ा मनभावन बेला थी आज बाग हो गए हरे भरे नव पल्लवों का हुआ विकास काली कोयल लगी कूकने छिप पत्तों के बीच बाजार पहुँचे कृषक भी खेतों में लिए बीज की गठरी आज उपवन में फूलों की डाली खिल उठी कलियों के साथ गुनगुन करते भँवरे आए करने लगे सुमन रस-पान रंग बिरंगा आया मौसम जिसने सबको खूब हर्षाया॥

रजनी श्रीवास्तव

एम.एस-सी. (Math) चतुर्थ सेमेस्टर

STORY OF PhD STUDENT (Joke)

I was in 12th
She was in 12th
I got BSc
She got BSc
I was doing MSc
She got married
I was preparing for JRF
She's the mother of 1 child
I got PhD
She's the mother of 2 children
I am doing PhD
Her doughter is in 1st std
I became doctorate
Her Daughter passed 10th
I have joined job
Her Daughter joined college
The greatest irony....
Today is my engagement
Her daughter is my fiancee
I will never do PhD again..

Jagriti Dubey
M.Sc-4th Sem (Math)

जो बीत गई सो बात गई

जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया
अम्बर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई

हरिवंशराय बच्चन

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

बढ़ती बेरोजगारी

1. अपने धोखा देते नहीं
अगर थोड़ा-सा
पढ़ लिया होता तो
Exam date देख कर रोते नहीं
2. समय जरा ठहर
बीत ना जाये ये सुहानी डगर
समय जरा ठहर
भ्रष्टाचार कर रहे लोग शहर-शहर
समय जरा ठहर
इन्सान को इन्सान की सिखा तु करना
समय जरा ठहर।
3. हौसला तोड़ मत
एक दिन ऐसा मुकाम आयेगा।
इतिहास के पन्ने पर
एक दिन तेरा भी
नाम आयेगा
4. विद्या का दीपक जलाकर
मन प्रकाशित करते हैं।
ज्ञान का धन देकर गुरु
जीवन सुख से भरते हैं।
5. देश में डेवलपमेन्ट हो रहा है।
अमीरों का काम अरजेन्ट हो रहा है।
बच्चा बाप से इन्टेलिजेन्ट हो रहा है।
घर घर में पार्लियामेन्ट हो रहा है।
देश बेचने का एग्रीमेन्ट हो रहा है।
रिश्वत का काम हैण्ड टू हैण्ड हो रहा है।
बेरोजगारी परमानेन्ट हो रहा है।
देश में डेवलपमेन्ट हो रहा है।

अभय सिंह
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

ये कलम नहीं दास्ताँ है मेरी

ये कलम नहीं दास्ताँ है मेरी
सीखा जो कुछ साथ इसी का था हर पल,
थकती नहीं है ये सफर में साथ मेरे,
इसकी ताकत से मेरे हौसलों का उड़ान मिलती है।
ये कलम नहीं दास्ताँ है मेरी
ये वो जरिया है जो मेरे मुकाम को जाता है
क्या सही, क्या गलत सब बतलाता है।
ये कलम नहीं दास्ताँ है मेरी
यूँ तन्हाइयों में बातें इसी से करता हूँ
सफर की यादों को संजोकर गुफ़्तगू करता हूँ,
बताती है यह सफर का वह मंजर
जब मैं खुद के हाथों से खुद की पहचान लिखता हूँ।

दोस्ती

ये दोस्ती बड़ी कमाल की होती है,
सब रिश्तों में बेमिसाल-सी होती है
कभी मम्मी, कभी पापा, कभी भाई,
कभी बहना, कभी अनजान से होती है।
ये दोस्ती बड़ी कमाल की होती है।
बँटती है बातें जब सुख-दुख की उनसे,
दिल में राहत भरी आराम-सी होती है।
ये दोस्ती बड़ी कमाल की होती है,
सब रिश्तों में बेमिसाल-सी होती है।
मुसीबतों के समय चट्टान-सी होती है।
और अगर स्वाभिमान की हो तो
फिर ये उनके सम्मान की होती है।
ये दोस्ती बड़ी कमाल की होती है,
सब रिश्तों में बेमिसाल-सी होती है।

बचपन

ऐ जिन्दगी बचपन लौटा दे मेरा,
बचपन के दिन बहुत याद आते हैं।
वो गिरकर सम्भलना और सम्भलकर गिरना,
वो पापा की गोद और माँ का आँचल
जिसमें सिमट जाती थी पूरी दुनिया,
ऐ जिन्दगी बचपन लौटा दे मेरा,
बचपन के दिन बहुत याद आते हैं।
वो हँसता हुआ चेहरा
जिस पर न था गमों का पहरा
वो खिलखिलाते चेहरे,
जैसे सूरज की पहली किरणें
वो मेलों में खिलौनों की
दुकानें बहुत याद आती है।
ऐ जिन्दगी बचपन लौटा दे मेरा,
बचपन के दिन बहुत याद आते हैं।
अब क्या मेले, क्या दुकान,
सब सपना सा लगता है
वो बचपन क्या गया हमारा,
सारा शहर अनजान-सा लगता है।
पूछेगा अगर कोई ख्वाईश तो यही कहूँगा
ऐ जिन्दगी बचपन लौटा दे मेरा।

उत्कर्ष सिंह
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

भूख तो भूख है (प्रेरणा कथा)

जीवन पूरा एक चक्र घूम चुका था और रोटी से शुरु हुई कहानी फिर रोटी पर आकर एक नए सिरे से समाप्त होने के लिए फिर शुरु हो गयी थी। उसके जूते जगह-जगह से फटे हुए थे और उसकी जुराबें तो सिलकर भी ठीक नहीं की जा सकती थी। उसकी फटी हुई जुराबें उसके जीर्ण शीर्ण जूतों में छुपी हुई थी। जगह-जगह से सिली हुई स्कूल की यूनिफार्म पहने शनी अपने स्कूल की तरफ चली जा रही थी। स्कूल के रास्ते में सड़क के किनारे के एक ढाबे के सामने रुक गयी। मक्खन लगी हुई रोटियों और दाल फ्राई को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया लेकिन वह सिर्फ अपने होंठ को काटकर रह गई। हालांकि उसका भूखा पेट भयंकर विद्रोह कर रहा था। अपने भूख को मारने के लिए उसने पहली कक्षा शुरु होने से पहले एक बोतल पानी पी लिया ताकि पढ़ायी के दौरान उसकी भूख फिर से परेशान न कर सके और वो कक्षा में पढ़ाई जा रही सब चीजों को ध्यान से सीख सके, उसकी शिक्षका ने कई सवाल पूछे पर रानी का ध्यान तो कही और ही था। उसने अंतिम बार रोटी छः महीने पहले खाई थी, छः महीनों से वो चावल ही खा रही थी या फिर वो बचा खाना जो उसके पिता घर लेकर आते थे शाम को। हालाँकि कई बार खाना बासी होता था और बदबू भी आ रही होती थी पर पेट तो भरना ही होता था लेकिन उस कक्षा में उसके मन में रोटी खाने की तीव्र इच्छा उठ रही थी, वो आशा कर रही थी कि लंच के समय उसकी कक्षा की कोई न कोई लड़की उसको भी अपने खाने के डिब्बे में से एक टुकड़ा रोटी का दे देगी लेकिन आज तक किसी ने भी उसको अपने डिब्बे में से कुछ खाने को नहीं दिया था कक्षा के सभी छात्र उसकी गरीबी के कारण उसका मजाक उड़ाते थे और सब उससे दूर रहते थे, सब शिक्षिका के प्रश्न का उत्तर बताने लगे। जब रानी की बारी आयी तो, उसने तुरंत रोटी कह दिया। सब हँसने लगे, शिक्षिका जानती थी कि रानी बहुत ही गरीब है। लंच के समय शिक्षिका ने अपने लंच के डिब्बे में से अपनी रोटियाँ और दाल रानी को खाने के लिए दे दिया रानी अपने आँसुओं को नहीं रोक सकी। बस वहीं से उसके जीवन की वास्तविक छात्रा की शुरुआत हुई। उसके बाद वो शिक्षिका रानी को हर दिन ही लंच के समय खाना देने लगी, उसकी शिक्षिका रानी को ट्यूशन पढ़ाती थी पर वो रानी से एकस्ट्रा पैसे नहीं लेती थी। वो केवल रानी से पढ़ाई की ही बातें करती थी। बस रानी अब खूब मन लगाकर पढ़ने लगी और उसने फिर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। वो हर वर्ष कक्षा में प्रथम आने लगी, इसके कारण उसको छात्रवृत्ति मिलने लगी। इसी बीच उसको आगे की शिक्षा का खर्च उठाने के लिए एक उदार व्यक्ति सामने आ गया और उसकी मदद से वो झोपड़ी में रहने वाली उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपने पैरों पर खड़ी हो गयी। वो कई वर्षों के बाद खुद भी एक शिक्षिका बनकर उसी में आ गयी जहाँ वो खुद पढ़ी थी। एक दिन रानी अपने उस शिक्षिका को धन्यवाद कहने के लिए उनके घर पहुँच गयी। उस शिक्षिका के द्वारा दी गयी रोटियों ने उसको सिखा दिया था कि जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए और अगर किसी उच्च उद्देश्य के लिए माँग कर भी खाना पड़े तो कोई बुरी बात नहीं है।

जीवन पूरा एक चक्र घूम चुका था और रोटी से शुरु हुई कहानी फिर रोटी पर आकर एक नए सिरे से समाप्त होने के लिए फिर से शुरु हो गयी थी।

अर्पिता पाण्डेय
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

❖❖❖❖❖

दिमाग की ताकत

दोस्तों इंसानों की सोच दो तरह की हो सकती है, सकारात्मक और नकारात्मक। अब यह इंसान पर निर्भर करता है कि वह अपनी जिन्दगी में सकारात्मक सोच रखता है कि नकारात्मक। आज के जेनरेशन में 90% लोग छोटी-छोटी बातों में नकारात्मक सोच रखने लगते हैं, लेकिन वो भूल जाते हैं कि उनके दिमाग में इतनी ताकत होती है कि जैसा वो सोच रखेंगे, उनका दिमाग उनके साथ वैसा ही कराने लगता है। मैं एक उदाहरण देकर समझाता हूँ। एक व्यक्ति जो अनपढ़ था उसे टीबी की बीमारी हो गई। वो गाँव के वैद्य के पास गया तो वैद्य अपने खेत में काम कर रहा था। जब बीमार व्यक्ति उसके पास गया और पूरी बीमारी बताई तो वैद्य ने उसे दवाई बताने की सोची लेकिन उसके पास लिखने को कुछ नहीं था तो उसने खेत में पड़ी एक ईंट उठाई और उसी ईंट पर कोयले से दवाई का नाम लिख दिया और उस बीमार व्यक्ति को देकर कहा ये दवाई मार्केट से ले लेना और हर दिन इसे पानी में घोल कर पी लेना। अनपढ़ होने की वजह से वो वैद्य की बातों को ठीक से समझ न पाया। 3 महीने बीत गए, 3 महीने बाद वो अनपढ़ व्यक्ति फिर से उस वैद्य के पास आया और बोला, आपने जो औषधि दी थी वो अच्छी थी, मैं आधा ठीक हो चुका हूँ। थोड़ी-सी औषधि और दे दीजिए। वैद्य ने कहा मैंने तुम्हें बताया तो था। व्यक्ति ने कहा हाँ, ईंट तो मेरे घर के आस-पास भी था लेकिन उस पर आपने जो मंत्र लिखा था, वो लिख दो। वैद्य ने जब उससे पूरी बात पूछी तो उसने बताया आपने जो ईंट दी थी, उसे मैं पानी में घोल कर 3 महीने से पी रहा हूँ और मुझे आराम है, ईंट पर लिखा हुआ आपका मंत्र काम कर गया। वैद्य हैरान हुआ लेकिन उसने उसको सच्चाई बताना ठीक न समझा क्यों कि वो ईंट उसके लिए दवाई से बेहतर काम कर रहा था। वैद्य ने एक और दूसरी ईंट ली और कोयले से उस पर उसी दवाई का नाम लिख उसे दे दी। कुछ महीनों बाद वो व्यक्ति पूरी तरह से ठीक हो गया। लेकिन हमारा दिमाग बहुत ज्यादा पावरफुल है। उस अनपढ़ व्यक्ति ने उस ईंट पर ही विश्वास कर लिया और वो उसे ठीक कर गई। जब हमारा मन किसी बात पर 1% भी बिना शक किए किसी बात पर 100% यकीन कर लेता है तो उसके जीवन में वो बात घटने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती, क्यों कि हमारे मन को कुदरत ने कुछ इस तरीके से बनाया है उसमें हम जो भी विचार डाले, उसे वो सच कर देगा। फिर चाहे पॉजिटिव विचार डालो या निगेटिव। चाकू का काम है काटना फिर चाहे उससे फल काटो या किसी का गला। चाकू को उससे कोई मतलब नहीं। उसी तरह हमारा मन भी है उसे अच्छे विचार दो या बुरे वो आपको रिजल्ट दे देगा। इसलिए पॉजिटिव बातों पर यकीन करें और यदि आपको 1% भी शक नहीं है 100% यकीन है कि आप जीवन में कोई बड़ा मुकाम हासिल कर जायँगे तो मैं आपको लिख कर दे सकता हूँ ऐसा होकर रहेगा। क्यों कि ये प्रक्रिया भी कुदरत के नियम में से एक है। दोस्तों अंग्रेजी में एक कहावत है, ''Be Positive'' हमें हमेशा सकारात्मक सोच रखना चाहिए, उसके बाद हम जिस भी मुकाम को हासिल करना चाहते हैं, उस मुकाम को हासिल जरूर करेंगे।'

अनुज श्रीवास्तव
(बी.काम IInd सेमेस्टर)

❖❖❖❖❖

एक अजन्मी बेटी की चिट्ठी
माँ के नाम !

मेरी प्यारी माँ.....!!

मैं खुश हूँ, और भगवान से प्रार्थना करूँगी कि, आप भी खुश रहें, माँ मैंने सुना है कि मुझे मासूम को जन्म लेने से पहले कोख में ही मार डालने की साजिश रची जा रही है, यह सुनकर मुझे यकीन नहीं हुआ, भला मेरी प्यारी-प्यारी कोमल हृदय वाली माँ ऐसा कैसे कर सकती है।

माँ! बस एक बार कह दीजिए ये सब कुछ जो मैंने सुना सब झूठ है, कोख में पल रही अपनी लाडो के शरीर पर एक माँ वार कैसे कर सकती है। दरअसल! यह सब सुनकर मैं दहल सी गई हूँ। मेरे तो हाथ भी इतने कोमल हैं कि डॉक्टर के क्लीनिक जाते वक्त आपका आँचल भी जोर से नहीं पकड़ सकती, कि आपको रोक लूँ, मेरे बाँह में इतनी मजबूती भी नहीं है कि आपके गले के लिपट सकूँ।

माँ आप मुझे मारने के लिए जो दवा ले रही हैं, वह दवा मुझे बहुत कष्ट देगी। मुझे बहुत दर्द होगा। आप तो देख भी नहीं पाएँगी की वह दवाई आपके पेट के अन्दर मुझे कितनी बेरहमी से मार डालेगी। माँ मुझे बचाओ यह दवा मुझे आपके शरीर से इस तरह फिसला देगी जैसे गीले हाथों में साबुन की टिकिया।

भगवान के लिए ऐसा मत करना माँ.....!

मुझे जन्म लेने की बहुत ललक है, माँ!

माँ आप चिन्ता मत कीजिए मैं आपके सिर पर बोझ नहीं बनूँगी, मत लाकर देना मुझे पायल, मत लाकर देना मुझे कपड़े, मैं दीदी की छोटी पायल, कपड़े लेकर पहन लूँगी।

माँ, बस एक बार मुझे इस कोख से निकाल कर चाँद, तारों से भरे खुले आसमान के नीचे जीने का मौका दीजिए, मैं आपका प्यार चाहती हूँ, मुझे मत मारिए, अपने बगल की डाल पर फूल बनकर खिलने दीजिए माँ!

माँ मेरा क्या कसूर है, जो जन्म लेने से पहले मार देना चाहती हैं, मुझे मत मारिए माँ, मुझे मत मारिए.....!

माँ और क्या कहूँ माँ?

आखिर तुम मेरी माँ हो, मुझे अपने पास आने दो माँ।

"बेटियों को अपनाइए आज को खुशहाल और कल को मुमकिन बनाइये"

मधु पाण्डेय
(B.Com 2nd Year)

आपकी
अजन्मी बेटी

❖❖❖❖❖

महिला सुरक्षा

भारत वह देश है जहाँ महिलाओं की सुरक्षा का खास ख्याल रखा जाता है, जाता था और जाता रहेगा, फिर भी महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं क्यूँ? वह असुरक्षित महसूस करती हैं क्यूँ?

बातें करते हैं हम बराबरी की और फिर उन्हें पीछे छोड़ देते हैं, उन्हें आगे बढ़ने से रोकते हैं क्यूँ? हर लड़की/महिला को हर दिन ना जाने कितनी सारी बातों का सामना करना पड़ता है—जैसे, कोई कुछ कह न दे, कोई कुछ बोले ना, कोई गलत तरीके से देखे न, अगर कोई कुछ बोलता है, कहता है तो महिला को फर्क पड़े क्यूँ? वो गलत न होते हुए गलत कहलाए क्यूँ? जिसने गलत किया वो गलत लेकिन उसके साथ महिला की गलतियाँ आए क्यूँ? लोग उसे गिनाए क्यूँ? उसे समझाएँ क्यूँ?

समझदार होते हुए भी महिला नासमझ बन जाए क्यूँ?

हमारे देश में महिला को लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा कहकर पूजा जाए सिर्फ मूर्तियों में ही क्यूँ? इनकी रक्षा के लिये धाराएँ (कानून) बनाई जाए पर इनकी जान न बचाई जाए क्यूँ? इनके साथ गलत होने से रोक ना पाया जाए क्यूँ? इंसान ही इंसान को जीने न देना चाहे क्यूँ? ये हर जगह आगे बढ़े अपने आप का बराबर साबित करें फिर भी इनके लिए हमारा नजरिया सकारात्मक ना हो पाए क्यूँ? महिलाओं के लिए मुफ्त कानूनी सहायता हो किन्तु मिल न पाए क्यूँ?

महिलाओं को दुनिया में आने से रोका जाय क्यूँ? उन्हें यह दुनिया न दिखाया जाए क्यूँ? महिलाओं के जरिये सब इस दुनिया में आए किन्त उसी महिला को उसका अधिकार न मिल पाए क्यूँ? मेरे सवालों का जवाब क्यूँ तक ही सिमट कर रह जाए क्यूँ?

स्नेहा पाण्डेय
(B.Sc 1st Year Semester II)

❖❖❖❖❖

नारी शक्ति

नारी शक्ति है, सम्मान है,
क्या उसका अस्तित्व, क्या उसकी पहचान है।
आजादी और चंचलता,
उसका सर्वाधिक अधिकार है।
वो एक नारी है, उसके
एक नहीं अनेक किरदार हैं।
बंध जाती है, खोखली रीत में,
क्या उसके जीवन की यही पहचान है।
नारी शक्ति है, सम्मान है,
क्या उसका अस्तित्व, क्या उसकी पहचान है।

यश श्रीवास्तव
(B.Com 3rd Year)

बहुत कुछ सीखना है

अभी तो आगाज है बहुत कुछ सीखना है।
है सींचना तकदीर को बस अब जीतना है।
सीखना है कुछ जिन्दगी से,
है सीखना जवानों से।
सीखना है कुछ चुनौतियों से,
है सीखना रुकावटों से।
जीत की चाह रखकर, है पाना मंजिल को।
जंग को जारी रखकर, है छूना उँचाइयों को।
मुश्किलों से ना हरकर, बस अब जीतना है।
अभी तो आगाज है,बहुत कुछ सीखना है।

यश श्रीवास्तव
(B.Com 3rd Year)

गंगा

मुझे हिमालय की पुत्री गंगा
अपने जन्मस्थान पर मिली,
स्वच्छ निर्मल सी वो
गाती हुई चट्टानों सी निकली
चंचलता उसकी
हिरणों को शर्मा देती
उसकी निर्मलता मानो
किरणों से धुल कर आती
मैंने उसे रोक कर कहाँ
तुझे कहीं क्यूँ है जाना
तू यही सुरक्षित रहेगी
यही तेरी सुन्दरता कायम रहेगी,
वहाँ नीचे तू कुरूप हो जाएगी
तेरी हर धारा धीमी हो जाएगी।
तेरी चंचलता कहीं खो जायेगी
तू जितनी स्वच्छ निर्मल है यहाँ
वहाँ उतनी मैली हो जायेगी।
इस पर गंगा समझाते बोली
बहना मेरा कर्म है
सागर से जा मिलना मेरा धर्म है
मुझे तो जाना ही होगा
इन चट्टानों को काटना भी होगा
अपना रास्ता बनाना ही होगा।
कई लोग मेरी राह देखते होंगे
कुछ प्यासे कुछ सूखे तट
मेरा रास्ता देखते होंगे
मुझे स्वार्थ तजकर
अपना फर्ज पूरा करना होगा।
कई पापी पुण्य की.....
चाहत में खड़े होंगे
मुझे न चाहते हुए भी
उन्हें स्पर्श करना होगा।
यही तो मेरी किस्मत है
औरों के लिए मुझे जीना होगा।
बाबुल की गोद से उठकर
मुझे अपना सफर तय करना होगा।
हाँ मुझे तो बहना होगा

प्रिया मिश्रा

(B.Sc. 1st Year Semester II)

❖❖❖❖❖

Essay on my teacher

* They use creative and innovative methods to help students concentrate better.
* India holds valuable and inspiring teachers that have contributed to the country's.
* A teacher is the guardian of a student's future and social development.
* A teacher is also addressed as a guru, and during the ancestral era, they imparted spiritual and academic knowledge through the gurukul system.

आयुष श्रीवास्तव

(B.Com 3rd Year)

❖❖❖❖❖

"Nothing is Everything"

First of all let us have an outlook over the both of words on the basis of meaning. The word "Nothing" has a pessimistic view. It is consisted of emptiness. It is an epitome of failure. The people who unwillingly accept it at last of their performance, are looked as loosers of the game. Nobody likes this fact knowingly just because of its negative sense. On the contrary of this term, the word "everything" is a Symbol of positivity and perfection. Almost everyone would like to choose the term "Everything" except the words "Something" and "Nothing".

Now let us know the philosophical but miraculous meaning of the term "Nothing" which has absorbed everything in its existences. As we all are living in this wonderful world having sweet and bitter memories of our life.

Everyday we get pleasure or sorrow from other people's activities along with our own. Sometimes we are the cause of either joy or pain for others. As light and darkness are the parts of a day of twenty four hours in the same way happiness and misery are unavoidable parts of our life.

These sweet and bitter moments of our lives always remain in our hearts. Through our whole life we occassionaly remembers some heart-touching moments which either made us happy or sad in our past life. Among these priceless memories there are some which we do not want to share openly with every one.

Some times it happens that we are engaged to enjoy our leisure time sitting alone at a place and our mind stays on one of those past memories. After some time we start to smile being flooded in the past happy moments or start to shed our tears being sad heartly. At the very moment someone comes to us after realising our situation and asks, "What happened"? Then we simply try to hide our situation saying to him only "Nothing."

Thus the word "Nothing" in the above refrence has absorbed many joyful and sorrowful moments of our past life in it. We are unable to bring back those past moments again in our life, but they are remained in our hearts forever. Occassionaly they come in our mind to make us laugh, regret and surprise.

प्रिन्स पाण्डेय
(B.Com 3rd Year)

''प्रेरणादायक लेख'' (संकलन)

1- कहने से नहीं होता, कुछ करना पड़ता है,
सब भुला के मुश्किलों पर अड़ना पड़ता है।
इतना आसान नहीं है, सपनों का सच हो जाना,
अपनी कामयाबी के लिये अपनी बुराइयों से लड़ना पड़ता है।

2- बदलाव में थोड़े घाव भी जरूरी हैं
इतनी धूप ठीक नहीं, कुछ छाँव भी जरूरी है।
जिन्दगी सीधी अच्छी नहीं लगती,
जिन्दगी में उतार चढ़ाव भी जरूरी है॥

3- हजारों बार बिखर कर सिमटने वाले हैं,
हम और भी तेज हवाओं से लिपटने वाले हैं।
हमें कमजोर न समझना दुनिय वालों
एक दिन इन हवाओं का रुख हम बदलने वाले हैं।

4- मिसाल ऐसी बनो की सब देखते रह जाएँ।
मुकाम ऐसा पाओ की सब दंग रह जाए।
जन्नत से ज्यादा सुकून तब मिलेगा,
जब बाप की पहचान तुम्हारे नाम से हो जाए॥

5- तेरी आज की मेहनत, तुझे कल पहचान देगी।
ये दुनिया एक दिन तुझे सलाम देगी।
हर वो रात जो तुमने मेहनत से बिताई है,
वो कल तुझको तेरा ईनाम जरूर देगी॥

6- देर से ही करो पर कुछ बड़ा करो,
उजालों के लिए अंधकारों से लड़ो।
माता-पिता का सिर ऊँचा करने के लिए
लोगों के बातों पर नहीं अपने सपने पर मरो॥

7- हौसले इतने बुलन्द रखो कि हर राह को मेनहत से सजा दो,
तुम्हारे हौसलों में कितना दम है कि उन मंजिलों को भी दिखा दो।
कामयाबी का चिराग जला के दुनिया की नजरे भी झुका दो
माँ-बाप के सपनों को इस कदर पूरा करो कि इतिहास बना दो॥

8- लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
मिलते नहीं मोती सहज ही पानी में लेकिन,
मोती खोजने वालों की मुट्ठी खाली बार-बार नहीं होती॥
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती—2

9- मुझमें और मेरी किस्मत में बस यही जंग है
मैं उसके फैसलों से तंग हूँ, वो मेरे हौसलों से दंग है।
मेरी मेहनत को देख अब मेरी तकदीर भी मेरे संग है,
अब बस कामयाबी का जुनून मेरे अंग-अंग है॥

10- शौख भी पूरे होंगे, इरादे भी पूरे होंगे।
तू मेहनत तो कर, तेरे सपने भी पूरे होंगे॥

रोशनी गुप्ता
(B.Com 1st Year)

❖❖❖❖❖

मेरी सोच

पंछी की तरह उड़ जाऊँ मैं,
कुछ अलग कर दिखाऊँ मैं,
आसान जिन्दगी तो सब जीते हैं,
पर कुछ कठिन परिश्रम कर आगे निखर जाऊँ मैं।
खुद को इस काबिल बनाऊँ मैं,
भीड़ में सबसे आगे निकल जाऊँ मैं,
दुनिया में कहीं भी जाऊँ किसी भी कोने में,
आपनी बातों, व्यवहारों और हुनर से पहचानी जाऊँ मैं।
सबसे कुछ अलग दिखूँ मैं,
दुनिया की आँखों में बस जाऊँ मैं,
हर मुश्किल से लड़ने की क्षमता हो,
और एक दिन आसमान छू जाऊँ मैं।
इस दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाऊँ मैं,
अपने माँ-बाप को हर खुशी दे पाऊँ मैं,
जब जीवन में साथ हो अपनों का,
तो हर मुश्किल व कठिन घड़ी को पार कर जाऊँ मैं।
पंछी की तरह उड़ जाऊँ मैं,
कुछ अलग कर दिखाऊँ मैं।

सुनिधि श्रीवास्तव
(B.Com 1st Year)

❖❖❖❖❖

दहेज एक कुप्रथा

- मैं चाहती हूँ कि वहाँ-वहाँ फूल उगा सकूँ जहाँ-जहाँ युद्ध हुए।
- वे प्रयोगशाला बंद हो जाए जहाँ विनाशकारी हथियार बनते हैं, वहाँ मैं लगा दूँगी आम के पेड़। सावन में झूला झूलेंगे शिशु। इतना न हो सके अगर तो वृद्ध दम्पति के लिए राशन लाने जितनी करुणा और बिलखते बच्चे को दुलार जितना वात्सल्य। अगर इतना भी बचा रहे हम में तो बहुत है। तब ईश्वर पृथ्वी को नष्ट नहीं होने देगा।

अमृता यादव
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष
(गणित)

❖❖❖❖❖

माँ और गुरु

माँ हमारी जन्म दाता है,
तो गुरु हमें सब कुछ सिखाता है।
माँ के चरणों में स्वर्ग है,
तो स्वर्ग की परिभाषा गुरु हमें सिखाता है।
पहली शिक्षा माँ के गोद से मिलती,
लेकिन जीवन में सफल होने
का बोध गुरु कराता है।
माँ न होती तो जीवन ना मिलता,
गुरु ना होते तो ज्ञान ना मिलता।
ज्ञान के बिना जीवन है अधूरा,
संसार में अनपढ़ का हाल है बुरा।
आदर करो गुरु का जिसने जीवन जीने का ज्ञान दिया।

मरियम नफीस
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष (जीवविज्ञान)

❖❖❖❖❖

दहेज एक कुप्रथा

ले लो दहेज कोई बात नहीं,
पर जान लो तुम्हारी औकात नहीं।
खेतों को रख गिरवी यह पैसा आया है,
पर फिर भी तुम्हारा मन नहीं भर पाया है।
क्या किसी की बेटी थी पर्याप्त नहीं?
या तुम्हारे फरमाइशों को या कुछ पर्याप्त नहीं?
दहेज के पैसों का धौंस दिखाओगे,
क्या इससे तुम अपनी शान बढ़ा पाओगे?
न जाने ये दहेज कितनी बेटियों को खा गई,
एक पिता की पुत्री होने का दुःख जता गई।
क्यों करते हो अपना मोल-भाव?
क्यों घटाते हो अपना ही प्रभाव?
''पैसों वाली नहीं, साक्षात लक्ष्मी का स्वागत करो,
बिना दहेज वाली शादियों से समाज को
अवगत कराओ।

सुप्रिया कसौधन
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष (गणित)

''आँसू''

कुछ लरजते से आँसू इन पलकों ने सम्भाले थे।
जाने क्या बात थी जो आँखों ने निकाले थे।
ऊँगली पे लेके, झाँका दिल, में जो आँसुओं के
अनकही थी कुछ बातें और कुछ अधूरे विसाले थे।
ये जानकर हुई मुझको हैरानी थी बला की
आँसू भी मेरे अपने किसी और के हवाले थे।
रह गये जो नजरों में, थे अँधेरे मेरे दिल के,
बह गए जो पानी में, आँखों के उजाले थे।
कुछ भी तो नहीं छोड़ा, वक्त ने पास मेरे
वो गम भी ले गया, जो बड़े नाजों में पाले थे।

शाम्भवी पाण्डेय
एस.एस-सी. प्रथम वर्ष (वनस्पति विज्ञान)

❖❖❖❖❖

हिन्दी से है हिन्दुस्तान

चाँद की शीतलता सुखदायी
किरणें होती सूर्य का पहचान।
संस्कृत से बनी संस्कृति हमारी,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान॥

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई,
आपस में सब भ्राता हैं।
हिन्दी के कारण ही सबमें,
प्रेमभाव का नाता है॥

मिलकर रहने से हम सबके,
भारत देश का हुआ निर्माण।
संस्कृत से बनी संस्कृति हमारी,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान॥

यह मीठी बोली और अद्भुत वाणी,
बढ़ती प्रेम पिपासा है।
हिन्दी का उत्थान कराना,
जन-जन की अभिलाषा है॥

ऐसी संगीतमय भाषा में,
बसता प्रत्येक भारतीय का प्राण।
संस्कृत से बनी संस्कृति हमारी,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान॥

तुलसी, सूर, कबीर की बोली,
हिन्दी है अत्यंत निराली।
मधु सम् अपने शब्दों से,
पाषाण हृदय पिघलाने वाली॥

विश्व विख्यात भाषा यह प्यारी,
सर्वत्र होता इसका सम्मान।
संस्कृत से बनी संस्कृति हमारी,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान॥

तमाम ग्रंथ रचनाओं का,
हिन्दी ही है मूल आधार।
बनी जो हमारी मातृभाषा,
हमपर है इसका आभार॥

न केवल किसी धर्म की होकर,
पूरे आर्यावर्त की है यह शान।
संस्कृत से बनी संस्कृति हमारी,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान॥

अमिषा पटेल
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष (जीवविज्ञान)

❖❖❖❖❖

College Days

Making friends and memories
that will last forever in my mind.
Learning the lessons that will mold
me into the person I will find.
Discovering the possibility of
choices that I will need to make.
Wondering about the challenges
that lie on whatever path I take.
listening to my heart, I set a course
for the goals I wish to achieve
And now I begin the journey of my
dreams, knowing that all I need is to
believe

आयुष श्रीवास्तव
(B.Com 2nd Year)

❖❖❖❖❖

कैसा है ये साल नया

अंक बदलते रहते हैं,
और साल बदलते जाते हैं।
देखो यहाँ हर किसी का
हाल बदल जाते हैं।
एक दिन की खुशी मनाते हैं,
एक दिन और गंवाते हैं।
ये कैसे लोग यहाँ रहते,
जो अपनी बर्बादी का जश्न मनाते हैं।
कैसे हुआ ये साल नया,
किताबें वही पुरानी है।
जो पहले पढ़ते रहते थे,
आज भी वही कहानी है।
नया साल तो आया है,
पर अपना नहीं है साल नया।
कुछ लोगों का जीवन बदला,
पर अपना नहीं है साल नया।
तो कैसे हुआ ये साल नया?
नया साल तो उनका है,
मंजिल जिनको मिल जाती है।
सपने पूरे हो जाते हैं,
ख्वाहिश पूरी हो जाती है।

❖❖❖❖❖

विश्वास का जादू

सोचते हो कि तुम पिटे हुए हो, तो तुम हो,
सोचते हो कि तुम साहसी नहीं हो, तो तुम नहीं हो,
जीतना चाहते हो, पर तुम्हें लगता है कि जीत नहीं पाओगे,
तो तय है कि तुम नहीं जीतोगे.....
सोचते हो कि तुम हारोगे तो, तो तुम हारोगे,
इस दुनिया में हम पाएंगे कि
को भी सफलता उसकी इच्छा से ही शुरु होती है,
सारा दारोमदार सोचने के ढंग पर है.....
ऊँचा उठने के लिये, ऊँचा उठने के बारे में सोचना पड़ता है,
और कोई भी सफलता मिलने से पहले
जरूरी है यह सोचना कि
तुम उसे हासिल कर सकते हो.....
जीवन एक संग्राम है
इसे यूँ ही हार जाना ठीक नहीं,
बनो एक मजबूत और तेज इंसान
जल्दी या देर से, जीतते वही हैं,
जो सोचते हैं कि वे पक्का जीतेंगे.....

दिव्यता पाण्डे
एम.एस-सी. द्वितीय सेम
(बॉटनी)

❖❖❖❖❖

''शिखर की यात्रा''

भोर होते ही सूर्य उदय हो जाता है। वह नहीं देखता कि मौसम कैसा है, धरती पर कोई उसकी प्रतीक्षा कर रहा है या नहीं। उदय होना उसका चरित्र है। उसमें अथाह उर्जा है किंतु उसे एकदम प्रकट कर देना उसका स्वभाव नहीं है। सूर्य अपनी किरणों को सहज भाव से उत्सर्जित करता है और शिखर तक पहुँचता है. शिखर पर पहुँचने के लिए वह स्वयं को तपाता है। शिखर पर पहुंचना उसके तप जाने की पराकाष्ठा है। सूर्य को ज्ञात है कि शिखर पर सदैव नहीं रह सकता। इसलिये वह स्वयं को समेटना आरम्भ कर देता है। जैसे उसके प्रकट होने से सहजता है वैसे ही अस्त होने में भी है। अगले दिन वह पुन: उठ खड़ा होता है। उसी ऊर्जा से और शिखर तक की यात्रा आरम्भ कर देता है। यह उसका आशावाद है।

मनुष्य का जीवन भी ऐसा ही है। मनुष्य को प्रत्येक दिन नया शिखर छूना होता है। उसे यदि शिखर पर पहुँचना है तो उसे अपने बीते हुए कल के अस्त से निराश होने की आवश्यकता नहीं है। यदि अस्त होना सत्य है तो शिखर पर पहुँचना भी सत्य है। न तो सदैव शिखर पर रहा जा सकता है न सदैव अस्त रहना नियति है। जो सदैव रहने वाली है, वह है सहजता और क्रियाशीलता जीवन कभी रुकना नहीं चाहिए। मन में सदैव शिखर पर पहुँचने का उत्साह बना रहना चाहिए। जीवन में निराशा, अकर्मण्यता का कोई स्थान न हो। क्रियाशीलता भी सहज भाव में हो। अतिरेक सदैव घातक होता है। पानी तभी तक गतिमान रहता है, जब वह नदी के किनारों के भीतर रहता है। किनारों को तोड़कर निकला पानी व्यर्थ जाता है और इससे किसी का भी हित नहीं होता। सहजता सबसे बड़ी शक्ति है, जो जीवन को सहेज कर रखती है और आगे बढ़ने की स्थितियाँ उत्पन्न करती हैं।

जैसे सूर्य जानता है कि भरी दोपहरी में सारी धरती पर उसका साम्राज्य होगा, तो वह बीच में न कहीं रुकता है न कहीं थकता है। इसलिये जिसे सफलता चाहिए, उसे भी रुकना और थकना जैसे दो शब्दों को अपने शब्दकोष से निकाल देना होगा।

अर्पिता पटेल

बी.एस-सी. (प्रथम वर्ष)

❖❖❖❖❖

''माँ''

घुटनों से रेंगते-रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ.....
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
माँ प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा-साधा, भोला-भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ,
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
''माँ!'' मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ.....

आयुष श्रीवास्तव

(B.Com 2nd Year)

❖❖❖❖❖

उड़ान

खोल दे पंख मेरे, कहता है परिंदा
अभी उड़ान बाकी है।
जमीन नहीं है मंजिल मेरी
अभी पूरा आसमान बाकी है॥

जिन्दगी के सफर में
बस इतना सबक सीखा है।
सहारा कोई-कोई देता है
धक्का देने को हर शक्स तैयार बैठा है॥

सामने हो मंजिल तो रास्ता न मोड़ना
जो मन हो वह ख्वाब न तोड़ना।
हर कदम पर मिलेगी कामयाबी तुम्हें
बस सितारे छूने के लिए

कभी जमी न छोड़ना।
जिन्दगी की असली उड़ान बाकी है
जिन्दगी के बहुत इम्तहान बाकी है।
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीन हमने
अभी तो सारा आसमान बाकी है॥

जब डूब रही थी कश्ती
और दूर था किनारा।
तब भी भरोसा बस
खुद पर ही था हमारा॥

संघर्ष से डरकर भागना नहीं है तुम्हें
डर से भागकर जीना नहीं है तुम्हें।
लड़ोगे तो शायद जीत जाओगे
मगर जीत से पहले रुकना नहीं हे तुम्हें॥

मंजिल उन्हीं को मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है।
पंख तो यूँ ही फड़फड़ाते हैं
हौसलों से उड़ान होती है॥

शाम सूरज को ढलना सिखाती है
शमा परवाने को जलना सिखाती है।
गिरने वाले को होती है तकलीफ पर
ठोकर ही इंसान को चलना सिखाती है॥

निगाहों में मंजिल थी
गिरे और गिरकर संभलते रहे।
हवाओं ने बहुत कोशिश की
मगर चिराग आंधियों में भी जलते रहे॥

बदल जाओ वक्त के साथ
या फिर वक्त बदलना सीखो।
मजबूरियों को मत कोसो
हर हाल में चलना सीखो॥

यूँ जमीन पर बैठकर
क्या आसमान देखता है।
पंखों को खोल
जमाना उड़ान देखता है।

जिन्हें गुस्सा आता है
वो लोग सच्चे होते हैं
मैंने झूठों को अक्सर
मुस्कुराते देखा है॥

हौसलों के तरकश में कोशिशों का
वह तीर जिंदा रखो।
चाहे हार जाओ जिंदगी में सब कुछ
फिर भी जीतने की उम्मीद जिंदा रखो॥

मुश्किल राहें भी आसान हो जाती है
हर राह पर पहचान हो जाती है।
जो लोग मुस्कुरा के करते सामना
किस्मत भी उनकी गुलाम हो जाती है।

श्वेता यादव
(B.Com. 1st Year)

❖❖❖❖❖

''दहेज एक प्रथा नहीं भीख''

''मेरे शब्दों में दहेज लेने का सामाजिक तरीका 'जो बिल्कुल गलत है।''

दहेज प्रणाली समाज में प्रचलित बुराइयों में से एक है। इस प्रणाली या प्रथा में दूल्हे के परिवार को नगदी, आभूषण, सम्पत्ति आदि दिया जाता है।

जब दहेज में कुछ कमी हो जाती है, तो दुल्हे के परिवार वाले लड़की का उत्पीड़न करना शुरु कर देते हैं।

जो एक बड़ी समस्या को जन्म देती है, कुछ हद तक रिश्तों में दरार आ जाती है।

कुछ रिश्ते टूट जाते हैं।

दहेज देने से लड़की के माता-पिता ऋण में डूब जाते हैं। कुछ लोग इतना कि उन्हें आत्महत्या करनी पड़ती है।

दहेज समस्या को दूर करने या रोकने के उपाय

- दहेज प्रथा को खत्म करने के लिए लोगों को जागरूक करना चाहिए ताकि कोई दहेज ले या माँगे नहीं।
- इसे विशेष पहल करके समाप्त कर देनी चाहिए।
- अगर कोई दहेज को लेकर लड़की का उत्पीड़न करता है तो लड़की के घर वालों को FIR करनी चाहिए।
- दहेज के उत्पीड़न के मामले में भारतीय दंड संहिता की धारा 498 A है जिसमें 3 वर्ष की सजा और साथ में जुर्माना भी लगाया जा सकता है।

इस बात से सबको अवगत करना चाहिए ताकि सबके मन में भय (डर) उत्पन्न हो, ताकि सभी लोग दहेज माँगने में या लेने में कतराये और दहेज प्रथा का अन्त या समापन हो सके।

- भारत सरकार ने दहेज निषेध अधिनियम 1961 लाया है। सभी को इसका पालन करना चाहिए।

नारायण कुशवाहा
(B.Com 2nd Year)

❖❖❖❖❖

''समाधान''

अध्यात्म आज के युवा को उसकी हर स्तर की दुविधाओं का तर्कसंगत समाधान प्रदान कर सकता है। समाधान के तौर पर अध्यात्म के पास कोरे शब्द नहीं, अपितु प्रमाणित अनुभव हैं। वे अनुभव, जिन्होंने हर स्तर पर हर दुविधा में अहसास कराया कि अगर आपके आधार में ब्रह्मज्ञान की ध्यान-साधना है, तो जीवन की कोई भी परिस्थिति आपकी मन:स्थिति पर हावी नहीं हो सकती। उदाहरण के तौर पर आप युवा सन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन को देख सकते हैं।

आयुष श्रीवास्तव
(B.Com 2nd Year)

❖❖❖❖❖

''माँ जैसा कोई नहीं''

माँ एक खुशबू है,
जिससे सारा जहाँ महक उठता है।
माँ एक पेड़ है,
जिसकी छाँव में, सारी थकान दूर हो जाती है।
माँ एक दुआ है,
जिसका साया हर वक्त सिर पर बना रहता है।
माँ एक मशाल है,
जो सीधा रास्ता दिखाती है।
माँ एक आवाज है,
जिसकी गूँज हमें जिन्दगी का अहसास दिलाती है।
माँ वो उपहार है,
जिसको मिलने का शुक्रिया खुद खुदा भी मानता है।
''साया बनकर साथ निभाती,
चोट न लगने देती,
पीड़ा अपने ऊपर ले लेती
सदा-सदा सुख देती है माँ''

Interesting Facts

1- The heart beats 35 million times a year.
2- "DREAMT" is the only English word that ends in the letters 'mt'.
3- "RHYTHM" is the longest English word without a vowel,
4- "Saint Lucia" is the only country in the world named after a woman.
5- "Skiing" is the only word with double 'i'
6- Your left lung is about 10 percent smaller than your right lung.
7- The speed of your sneeze is 160 km/hr.
8- Dogs actually understand some English.
9- If all our news papers were recycled, we could save about 250, 000,000 tree each.

अंकित सैनी
(B.Com 3rd Year)

Educate a girl child

Why don't you teach me?
I am not just born to make coffee and tea.
My heart pains badly
When I say this sadly
I would like to go to school.
Where children learn and know everything
You don't know how I feel
When children carry bags and meal.
I'm just a child
Who is so gentle and mild.
At least now let me go to school.
As I don't want to be fool.
We will glow like pearls
So, at least please educate girls.

Vaidehi Singh
(B.Com 1st Year)

Poem Commerce

As they caught the main stream
He rone in fire and main stream
with an eye upon the wheel
Registration at desk.
To bend out a cup of establishment
A couple of phrase
The result of his length
There were no walves at desk.
Registration shall he be
A commerce apprentice.
Your arm to the night-a thought days
Whose veranda shall carry to envy
A postilition who had tumbled
Ignorant to tendency
They thought their own share
The right, there was no path
Messengers had passed
Variety as entertainment.
A pencil upon the writer
Established commerce
An explication requires
Commerce established.

Vaibhav Elani
(B.Com 1st Year)

''विचार''

गरीब मीलों चलता है भोजन पाने के लिए,
अमीर मीलों चलता है उसे पचाने के लिए..
किसी के पास खाने के लिए एक वक्त की रोटी नहीं,
किसी के पास एक रोटी खाने के लिए वक्त नहीं...
कोई अपनों के लिए अपनी रोटी छोड़ देता है,
कोई रोटी के लिए अपनों को छोड़ देता है।
जीता ऐसे है जैसे कभी मरेगा नहीं,
और मर ऐसे जाता है जैसे कभी जीया ही नहीं
एक मिनट में जिन्दगी नहीं बदलती,
एक मिनट में लिया गया फैसला जिंदगी बदल देती है।

''जिन्दगी''

कल एक झलक जिंदगी को देखा
वो राहों पर मेरी गुनगुना रही थी।
फिर ढूँढा उसे इधर-उधर
वो आँख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी।
एक अरसे के बाद आया मुझे करार
वो सहला के मुझे सुला रही थी
हम दोनों क्यूँ खफा हैं एक दूसरे से
मैं उसे और वो मुझे समझा रही थी।
मैंने पूछ लिया.....
क्यों इतना दर्द दिया कमबख्त तूने,
वो हँसी और बोली.....
मैं जिंदगी हूँ पगली, तुझे जीना सिखा रही थी।

❖❖❖❖❖

जिन्दगी का दस्तूर

जिन्दा रहने के लिए जीने की आरजू जरूरी है
जैसे किसी फूल के लिए उसकी खुशबु जरूरी है
यूँ तो सारी दुनिया जी रही है दोस्तों
मगर दिल में जीने की जूस्तजू जरूरी है.....
अपनो से तो हर पल मिलना होता है,
कभी-कभी गैरों से गुफ्तगू जरूरी है.....
महज आँख मूँद लेने से नींद नहीं आती,
सोने के लिए दिल का सुकून जरूरी है.....
नजरों के मिलने को मोहब्बत नहीं कहते,
मोहब्बत के लिए मोहब्बत का जुनून जरूरी है....।

अनुपमा शर्मा
(B.Com 1st Year)

❖❖❖❖❖

All The Time

Did you find your ever after ?
Is there somewhere you belong?
Is your world now filled with laughter?
Is there nothing for which you long?

Do you ever look behind you,
and wonder about what you see?
When the memories come to find you,
do you ever think of me?

Do you think that love can lesson,
if you pretend it isn't there?
Do you ever, ever question,
What could have been if we clared?

Are you happy to let it linger?
Does it never cross you mind?
The world that slipped through our fingers
I think of it all the time.

राहुल कुमार गुप्ता
(B.Com-I)

❖❖❖❖❖

ऐ जिन्दगी

ऐ जिन्दगी तू सही है क्या, खुलकर बताया कर,
बड़ी परेशान सी लगती है, कोई बात है तो जताया कर,
बे वजह न मुस्कुराया कर।
ऐ जिन्दगी तू सही है क्या, खुलकर बताया कर,
सुना है अकेले में बातें करता है, कोई साथ
वही है क्या, तो माँ से बताया कर।
ऐ जिन्दगी तू सही है क्या खुलकर बताया कर।
छोटी-सी दुनिया है, इसमें हँसना और मुस्कुराना
सीख जाया कर हर किसी की बातों को दिल से न लगाया कर।
माना चुभन सी होती है लोगों की बातों से,
अब हर किसी को अन्दर न बिठाया कर।
ऐ जिन्दगी तू सही है क्या, खुलकर बताया कर।
दफन करके यादें, याद न कराया कर
बीते हुए कल को आज में न उलझाया कर,
ऐ जिन्दगी तू सही है क्या, खुलकर बताया कर।

उत्कर्ष सिंह
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष (कम्प्यूटर)

❖❖❖❖❖

Success Stories

Being successful is the desire of all of us residing over this lovely planet. It does not matter whether the concerned person is a child, youth or the old aged, at each and every stage of our wide life span, it is our inbuilt desire to be successful and proceed forward consistently towards more massive success.The mentality of competing with each other can frequently be noticed at any of the places including schools, colleges, coaching, work fields including organizations, offices, etc to name a few. As a comparison to our efforts towards the works to get success, we often expect much more and want success to knock our doors very soon.If in case, it does not happen, we use to get frustrated and finally get deeper inside the darkness of inferiority. Such a situation has been noticed among most of the people where regular and dedicated efforts have been ignored and merely the failures have been entertained.There stand several such examples all over the world. Most of the iconic personalities have previously faced serious failures in their life's struggles. Yet, they continued on their ways to success and finally achieved massive success in their fields of expertise. No caste, creed, religion or colors stopped them ever in their ways towards success.The list of 10 best successful failures is mentioned with the help of the following bullet points:1. Steve Jobs: Steve Jobs has been known as an iconic figure for the establishment of Apple like the biggest company. However, it is extremely shocking to know that the $2 billion company with over 4000 employees has been started with only two persons in a garage. It is also to be noticed that this great establisher has been dismissed and fired from the company from which he has started his career. Further, realizing his potential and capabilities, Steve Jobs proceeded further towards establishing this biggest company which is famously known as 'Apple'.2. Bill Gates: It was very much important for Bill gates to heed the lessons of failure in comparison to celebrating the joy of success. This great entrepreneur who has established Microsoft like the biggest software company is a dropout student from Harvard. Furthermore, he has also been known for his self-owned business figure known as Traf-O-Data which was one of the biggest failures in history. The entire investment of Bill Gates got vanished and unfortunately, even the education could also not get completed. But, the keen desire and the passion for the computer programming based stuff led him to establish such biggest software company with the brand name 'Microsoft'.3. Albert Einstein: Albert Einstein is a well-known scientist and extraordinary genius personality known by almost all of us all over the world due to his great inventions and contributions towards science. He quoted that success is a failure in progress and someone who has never failed

cannot truly be a successful person. During childhood, he suffered from continuous failures. He was not even able to speak fluently till the age of nine years following which he has been expelled from the school. Furthermore, his admission to Zurich Polytechnic School was also not considered. But, leading to the ways of success consistently, he proved himself as a renowned gem in the ocean of science and technology and finally won the Nobel Prize for Physics in 1921.4. Abraham Lincoln: This great personality who has also been the ex-president of the USA has suffered regularly from massive failures year after the year. Lincoln failed in his business in the year 1831 and after which in the year 1836, he got a major nervous breakdown. Struggling consistently for years, he again failed in 1856 during US presidential elections. Fighting and struggling consistently, he elected as the sixteenth President of the USA in 1861 and went on leading towards his way of life.5. J.K.Rowling : J.K.Rowling has been known as the famous author of the most selling book 'Harry Potter' who has clearly stated about her failures during a speech ceremony commenced at Harvard. She stated about her unsuccessful marriage life with an entire life in front of live lonely with a jobless situation. Such a difficult situation without a life partner and a job to survive forced her to start a new life as a dynamic author. Her creativity finally led her to the zenith of success.6. Michael Jordan: Michael Jordan is one of the most renowned basketball players in sports world history. He was a short-height boy early in childhood due to which he often uses to get rejected during the selection processes. After being grown up and started playing like a basketball player, he even failed to hit over nine thousand shots and ultimately lost over three hundred games for twenty-six times. He got frustrated a lot but his dedication and consistency paved his way towards success.7. Walt Disney: Walt Disney has been known as one of the famous cartoonist and creator of famous cartoon creatures such as Mickey Mouse, Donald Duck, etc to name a few. He even failed several times in his life. His unsuccessful attempt to join armed forces finally forced him to drop out of the schools and leave his further studies. His initiative Laugh-O-Gram Studios even went bankrupt and finally, after joining a newspaper agency named Missouri Newspaper, he was fired because of not being creative enough as per the expectations.8. Vincent Van Gogh: This famous personality has been known as one of the greatest painter and artist along with a world-renowned icon in world history. However, due to continuous failures and misfortunes such as mental illness and improper bonding in the relationships forced him to commit suicide at an early age of merely 37 years. During the entire life span, this person sold only a single painting which revolutionized him in the world of arts and paintings which is alive to date.9.

Stephen King: This name is famous as the most renowned writer all over the world. However, he met several misfortunes and failures during his life span. His childhood was spent under the dark capture of poverty with added misfortunes of getting in under the cover of drugs and alcohol as well. But, finally, he kept on concentrating on his writing based hobby and professionalized it by developing several new writing styles along with new copyrighting mechanisms as well.10. Steven Spielberg: This great filmmaker who has won countless records and prizes for his contribution towards best film making has also suffered from several failures in his life. He was not able to get higher examination grades in the schools during the childhood following which he has been suspended three times from the University of Southern California. Following his passion and dedication, he went on creating great movies and finally won three Oscar awards and made a sum total of fifty-one great movies. Conclusion: Success always looks ahead of the silly excuses and puts itself forward than the created misconceptions. It is never burdened on religious ethics and not at all dependent on any specific religions including Hindu, Muslim, Christianity, etc to name a few. Success is the result of key determination and concentration while moving ahead in the path of workings. The story of all the ten world-renowned personalities is enough to build an everlasting potential towards reaching the goal of success.

Dr. Gaurav Srivastav
Asst. Professor, Botany Dept.

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

कवि
सोहन लाल द्विवेदी

❖❖❖❖❖

शिक्षक परिवार

डॉ० अनिल कुमार सिंह—प्राचार्य

विज्ञान संकाय

वनस्पति विज्ञान विभाग—

1- डॉ० अवनीश (विभागाध्यक्ष) प्रोफेसर
2- डॉ० अनीता कुमारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर
3- डॉ० आलोक रंजन असिस्टेन्ट प्रोफेसर
4- श्री विशाल कुमार गुप्ता असिस्टेन्ट प्रोफेसर
5- डॉ० क्षमता श्रीवास्तव असिस्टेन्ट प्रोफेसर
6- डॉ० श्वेताम्बरा श्रीवास्तव असिस्टेन्ट प्रोफेसर
7- डॉ० मधुलिका श्रीवास्तव असिस्टेन्ट प्रोफेसर
8- डॉ० मन्जुला श्रीवास्तव असिस्टेन्ट प्रोफेसर
9- डॉ० गौरव श्रीवास्तव असिस्टेन्ट प्रोफेसर

नोट—वनस्पति विज्ञान की विभागाध्यक्ष प्रो० शैल पाण्डे ने इसी सत्र के नवम्बर 2021 में डी०ए०वी० कालेज, गोरखपुर में प्राचार्या का पदभार ग्रहण किया।

रसायन विज्ञान विभाग—

1- डॉ० आलोक कुमार श्रीवास्तव (विभागाध्यक्ष) प्रोफेसर
2- डॉ० संगीता श्रीवास्तव असिस्टेन्ट प्रोफेसर
3- डॉ० शैलेश वर्मा असिस्टेन्ट प्रोफेसर
4- डॉ० संजय कुमार गौतम असिस्टेन्ट प्रोफेसर
5- डॉ० सी.पी. सिंह एसोसिएट प्रोफेसर
6- श्री विकास कुमार सिंह असिस्टेन्ट प्रोफेसर
7- श्री रणधीर कुमार असिस्टेन्ट प्रोफेसर
8- डॉ० मनोज कुमार श्री० असिस्टेन्ट प्रोफेसर
9- डॉ० अल्पना त्रिपाठी असिस्टेन्ट प्रोफेसर
10- डॉ० संजय सिंह असिस्टेन्ट प्रोफेसर
11- डॉ० शरद गुप्ता असिस्टेन्ट प्रोफेसर

औद्योगिक रसायन—

1- डॉ० रविन्द्र कुमार शुक्ला असिस्टेन्ट प्रोफेसर

गणित विभाग—

1- डॉ० उमेश कुमार गुप्ता (विभागाध्यक्ष) प्रोफेसर
2- डॉ० आर० एन० शुक्ला असिस्टेन्ट प्रोफेसर
3- डॉ० अमित राय असिस्टेन्ट प्रोफेसर
4- डॉ० अजय कुमार श्रीवास्तव असिस्टेन्ट प्रोफेसर
5- डॉ० आर० एन० यादव असिस्टेन्ट प्रोफेसर
6- डॉ० आकाश पाण्डेय असिस्टेन्ट प्रोफेसर

भौतिक विज्ञान विभाग—

1- डॉ० शैलेन्द्र कुमार श्री० प्रोफेसर
2- डॉ० अमर नाथ ठाकुर (विभागाध्यक्ष) प्रोफेसर
3- डॉ० ए० एन० मिश्रा असिस्टेन्ट प्रोफेसर
4- डॉ० एस. पी. दूबे असिस्टेन्ट प्रोफेसर
5- डॉ० संजय यादव असिस्टेन्ट प्रोफेसर
6- डॉ० आर० पी० त्रिपाठी असिस्टेन्ट प्रोफेसर
7- डॉ० आकांक्षा सिंह असिस्टेन्ट प्रोफेसर
8- डॉ० सतीश शर्मा असिस्टेन्ट प्रोफेसर

जन्तु विज्ञान विभाग—

1- डॉ० निखिल कुमार (विभागाध्यक्ष) प्रोफेसर

2– डॉ० नमिता कुमार — प्रोफेसर
3– डॉ० संतोष कुमार त्रिपाठी — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
4– डॉ० शैलेन्द्र कुमार — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
5– जितेन्द्र कुमार — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
6– डॉ० संगीता त्रिपाठी — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
7– डॉ० फणिन्द्र त्रिपाठी — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
8– डॉ० शशांक श्रीवास्तव — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
9– डॉ० अरुण कुमार श्री० — असिस्टेन्ट प्रोफेसर

इलेक्ट्रानिक्स—

1– डॉ० सुभाष शर्मा — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
2– डॉ० शिखा श्रीवास्तव — असिस्टेन्ट प्रोफेसर

कम्प्यूटर एप्लिकोशन—

1– डॉ० रितेश कुमार श्री० (विभागाध्यक्ष) — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
2– डॉ० रूपम श्रीवास्तव — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
3– डॉ० गौतम सिन्हा — असिस्टेन्ट प्रोफेसर

मनोविज्ञान—

1– डॉ० सुष्मिता उपाध्याय (विभागाध्यक्ष) — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
2– डॉ० अजय बहादुर सिंह — असिस्टेन्ट प्रोफेसर

शारीरिक शिक्षा—

डॉ० महेश यादव (विभागाध्यक्ष) — एसोसिएट प्रोफेसर

पुस्तकालय—

डॉ० सुशील कुमार सिंह — पुस्तकाल्याध्यक्ष

वाणिज्य संकाय—

1– डॉ० सदफ अतहर (विभागाध्यक्ष) — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
2– डॉ० आयुष यादव — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
3– डॉ० नितिन बक्शी — असिस्टेन्ट प्रोफेसर

गृह विज्ञान—

1– डॉ० शक्ति सिंह (विभागाध्यक्ष) — असिस्टेन्ट प्रोफेसर
2– प्रियंका सिंह — असिस्टेन्ट प्रोफेसर

तृतीय श्रंणी कर्मचारी—

1– डॉ० विवेक कुमार यादव — OS
2– श्रीमती रीता शुक्ला
3– श्री कमलेश लाल — एकाउन्टेन्ट
4– श्री संजय श्रीवास्तव
5– श्रीमती विनीता श्रीवास्तव
6– श्रीमती ज्योतिबाला श्रीवास्तव
7– झिनकू प्रसाद — लैब एसिस्टेन्ट
8– श्रीमती शशिबाला श्रीवास्तव — लैब एसिस्टेन्ट
9–श्री अनिल नायक — लैब एसिस्टेन्ट
10– श्री अमृत लाल — लैब एसिस्टेन्ट
11– श्री महेश चन्द्र मौर्या — लैब एसिस्टेन्ट
12– श्री शिवम आनन्द — लैब एसिस्टेन्ट
13– श्री प्रमिल कुमार मिश्रा — लैब एसिस्टेन्ट
14– श्री धनन्जय कु० श्रीवास्तव — लैब एसिस्टेन्ट
15– श्री रजत कुमार श्रीवास्तव — लैब एसिस्टेन्ट
16– श्री कुलदीप सहाय — लैब एसिस्टेन्ट

17- श्री अन्जनेय गुप्ता लैब एसिस्टेन्ट
18- श्री सुरेश गुप्ता लैब एसिस्टेन्ट
19- श्री अनिल कुमार गुप्ता लैब एसिस्टेन्ट
20- श्री शशांक शेखर श्रीवास्तव लैब एसिस्टेन्ट
21- श्री पूर्णिमा शर्मा लैब एसिस्टेन्ट

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी—

01- श्री आलिम
02- श्री कृष्ण कुमार
03- श्री ईश्वर चन्द यादव
04- श्रीमती केतकी देवी
05- श्री ओम प्रकाश
06- श्रीमती सुरेखा देवी
07- श्री संदीप पटेल
08- श्री दिलीप कुमार
09- श्री शैलेन्द्र कुमार
10- श्री मुकेश कुमार भारती
11- श्री त्रिलोकी यादव
12- श्री मकर ध्वज पाण्डेय
13- श्री मनोज कुमार
14- श्री धर्मवीर कुमार शर्मा
15- श्री चन्द्र प्रताप यादव
16- श्री अमर नाथ गौड़
17- श्री बृजराज
18- श्री सुनील कुमार गौड़
19- श्री रामज्ञा
20- श्री महेताव आलम
21- श्री गुड्डू श्रीवास्तव
22- श्री सुरेश प्रसाद
23- श्री अमर नाथ मिश्रा
24- श्री वृजेश मिश्रा
25- श्री राम धनी
26- श्री अब्दुल
27- श्री युसुफ
28- श्री राजेश यादव
29- ओ० पी० मिश्रा
30- विनय कुमार

❖❖❖❖❖

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1–	श्री गंगा दयाल श्रीवास्तव	अध्यक्ष
2–	श्री मंकेश्वर नाथ पाण्डेय	प्रबन्धक
3–	श्री हरिनन्दन श्रीवास्तव	उपाध्यक्ष
4–	डॉ० संजीव गुलाटी	सदस्य
5–	श्री बलराम पाण्डेय	सदस्य
6–	श्री राजीत श्रीवास्तव	सदस्य
7–	श्री पाण्डेय राजीव प्रसाद	सदस्य
8–	श्री नीरज अस्थाना	सदस्य
9–	श्री अजय कुमार श्रीवास्तव	सदस्य
10–	श्री एस० के० माथुर	सदस्य
11–	श्री राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव	सदस्य
12–	श्री राकेश गोयल	सदस्य
13–	श्री एस० सी० श्रीवास्तव	सदस्य
14–	श्री राम कुमार	सदस्य

❖❖❖❖❖

अखबारों की नज़र में महाविद्यालय की गतिविधियाँ

एमजी कालेज के पांच शिक्षक बने प्रोफेसर

पहली बार कालेज के शिक्षक बने प्रोफेसर

प्रोफेसर पदनाम पाने वाले डिग्री कालेज के शिक्षक व प्रबंधकों ● जागरण

एमजीपीजी कालेज में बांटा गया स्मार्ट फोन

पीजी प्रवेश में मिलेगा पांच फीसद लाभ

गोरखपुर(एसएनबी)। महात्मा गांधी पीजी कालेज एवं कॉमर्स विभाग के संयुक्त तत्वावधान में प्रशासनिक भवन के सेमिनार हाल में छह माह का टैली प्राइम एक्सपर्टाइज कोर्स का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के दौरान मंकेश्वर पाण्डेय प्रबंधक एमजीपीजी कालेज ने कहा कि इस कोर्स में प्रतिभाग करने वाले छात्रों को 5 प्रतिशत का लाभ परास्नातक प्रवेश के दौरान मिलेगा। उन्होंने छात्र-छात्राओं के साथ कोर्स की विस्तृत चर्चा करने के उपरान्त बताया कि महाविद्यालय में अगले सत्र से एमकाम एवं एमएससी इलेक्ट्रॉनिक्स पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किया जायेगा। इस दौरान कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में जीवन में आकस्मिकता के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि किस तरह से हम तकनीक का बेहतर उपयोग करते हुए अपनी जीवन शैली को बेहतर कर सकते हैं। डॉ. सुभाष कुमार गुप्ता कोर्स की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम की संचालिका डॉ. अंजली सिंह ने अध्यक्ष वाणिज्य संकाय ने आभार ज्ञापित किया।

छात्र-छात्राओं में 300 स्मार्टफोन वितरित

गोरखपुर (एसएनबी)। महात्मा गांधी पीजी कालेज में लगातार दूसरे दिन बीएससी तृतीय वर्ष के सात छात्राओं में 300 स्मार्टफोन का वितरण महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार सिंह एवं वितरण योजना के नोडल अधिकारी डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव, अध्यक्ष एसमन विभाग द्वारा किया गया। इस वितरण कार्यक्रम में विद्यार्थियों को डॉ. सी.पी. सिंह, डॉ. संजय गौतम द्वारा भी स्मार्टफोन वितरित किया गया।

एमजी पीजी कालेज में छात्र-छात्राओं को वितरित किया गया मोबाइल टैबलेट।

गोविवि. में भी संबद्ध महाविद्यालयों के प्रोफेसर बनने की प्रक्रिया शुरू

डॉ. अनिल सिंह बने एमजीपीजी के प्राचार्य

एमजीपीजी कालेज में जॉब प्लेसमेंट वाया इंटरप्रेन्योरशिप सेल कार्यक्रम आयोजित

महात्मा गांधी पीजी कालेज के पांच शिक्षक बने प्रोफेसर

'अपना धर्म निभाएंगे, वोट देने जाएंगे'